DATCC
MORENA

मध्यप्रदेश का मुकुट

मुरैना

कॉफी टेबल बुक

इस पुस्तक के सर्वाधिकार प्रकाशक व लेखक के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक व लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

ISBN	: 978-81-19206-33-9
कॉपीराइट	: लेखिका एवं प्रकाशक
प्रथम संस्करण	: 2023
लेखक एवं फोटोग्राफर	: डॉ. कायनात काजी
सम्पादन	: डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर
पृष्ठ सज्जा	: विनय काम्बोज
मुद्रण	: अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि.
प्रकाशक	: जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद, मुरैना, मध्यप्रदेश

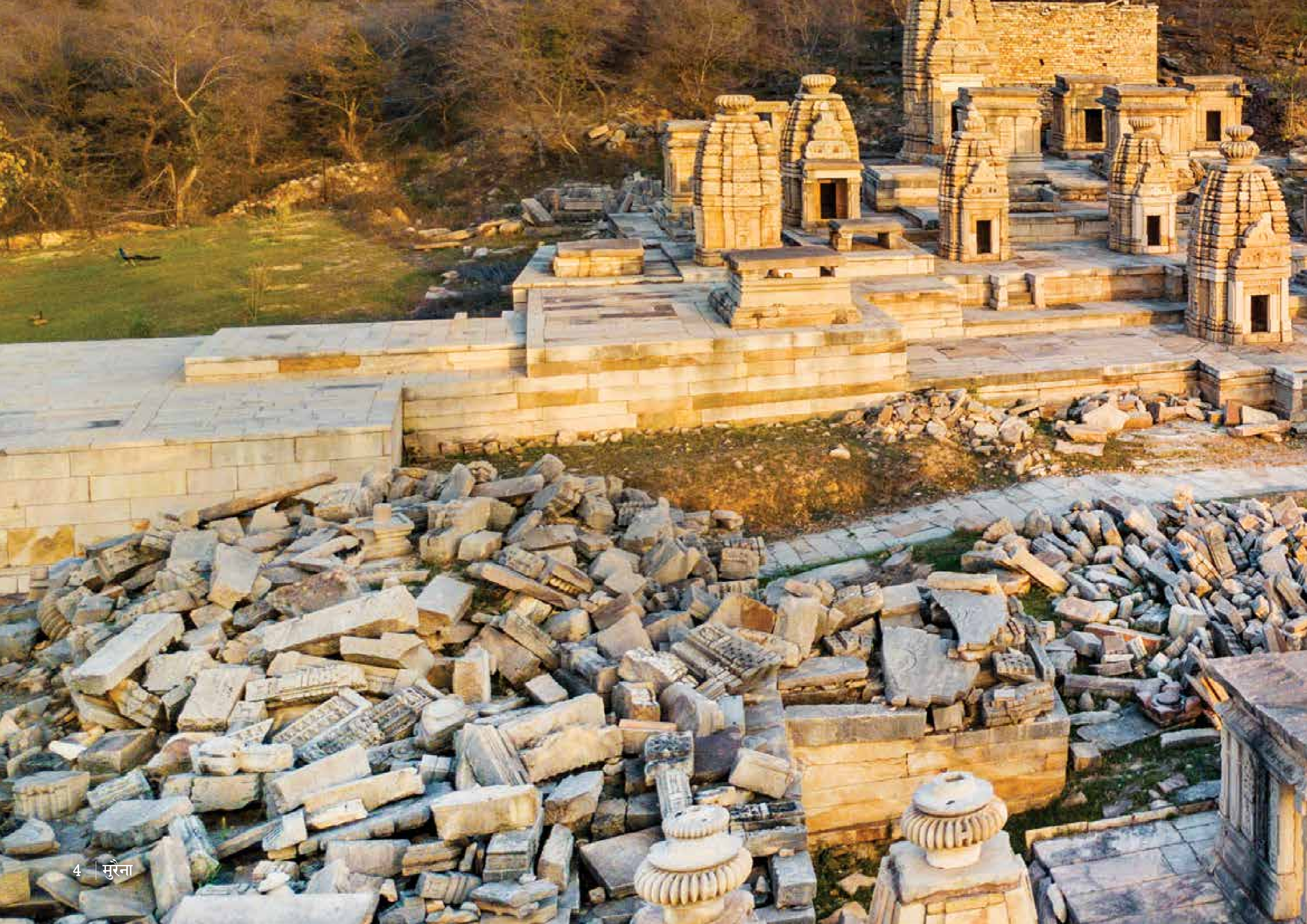

स्रोत: मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड

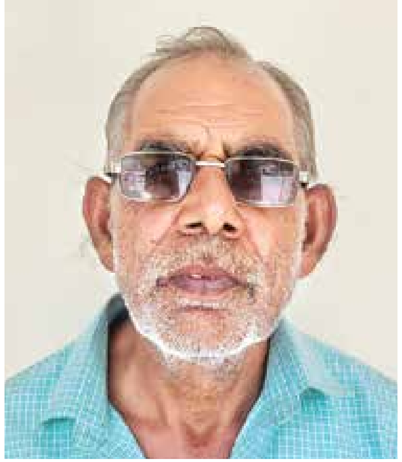

समर्पण

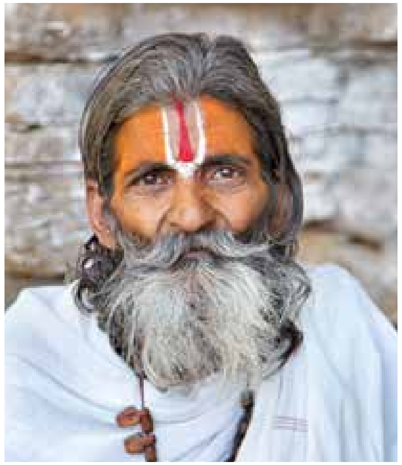

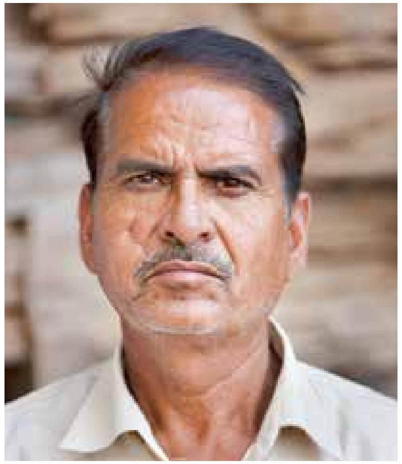

यह पुस्तक समर्पित है मुरैना के वासियों को, जिन्होंने इसकी विरासत को आज भी संजोकर रखा है।

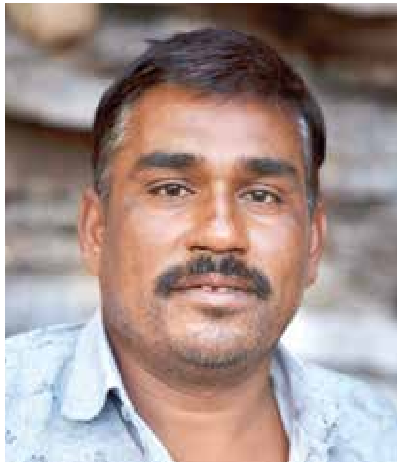

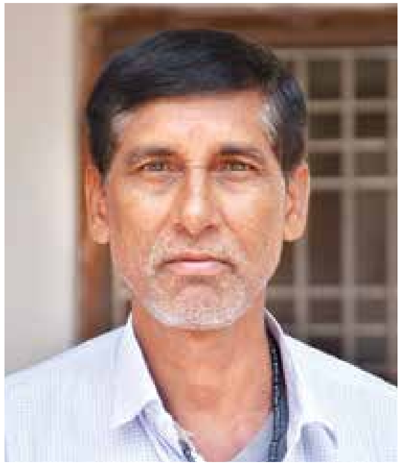
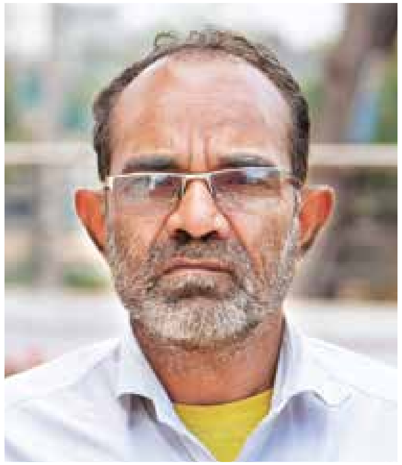

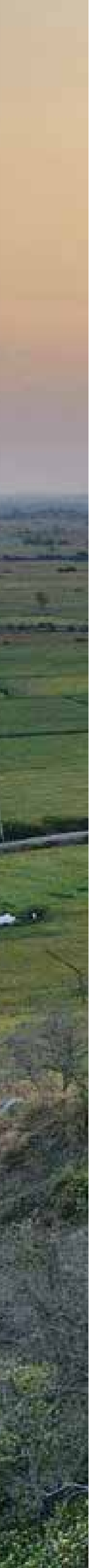

लेखकीय

मुरैना का नाम सुनते ही जो पहला दृश्य मस्तिष्क में बनता है वह है चम्बल के बीहड़। और यह शब्द अपने साथ लाता है सिरहन पैदा करने वाली बीहड़ों से जुड़ी डाकुओं, दस्युओं और बागियों की हज़ारों कहानियाँ। तो क्या मुरैना का इतिहास बस तीन-चार दशक पुराना है? डाकुओं की कहानियाँ तो इतनी नई हैं कि इन्हें इतिहास की श्रेणी में रखा भी नहीं जा सकता है। हालांकि इन कहानियों ने मुरैना के स्वर्णिम अतीत को धूल की मोटी पर्त की तरह ढक-सा दिया है।

मैं क्योंकि एक शोधकर्ता और यायावर हूँ इसलिए मैंने मुरैना को बीहड़ों के पार देखने की कोशिश की है। मैंने इस बड़े ज़िले की परतों को खंगालने का एक छोटा-सा प्रयास किया है। मुरैना आने से पूर्व मुझे भी अहसास नहीं था कि यहाँ की मिट्टी में इतनी सारी अमूल्य निधियाँ छुपी हुई हैं।

मैं सबसे पहले आभारी हूँ जिला कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना जी की, जिन्होंने मुझे मुरैना के प्रागैतिहासिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत के दस्तावेज़ीकरण करने का अवसर दिया। अपने देश की समृद्ध संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए इससे पुनीत कार्य कोई हो नहीं सकता है।

मैं आभारी हूँ, सीईओ जिला पंचायत मुरैना डॉ. इच्छित गढ़पाली जी की, जिन्होंने मुझे पंचायत स्तर पर जाकर क्षेत्र के गांवों और कस्बों में स्थित इन अमूल्य निधियों को दुनिया के सामने तस्वीरों के साथ प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।

मैं आभारी हूँ जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के डॉ. अशोक शर्मा जी, सुश्री निधि जैन की, जिनके सहयोग से यह कार्य संपन्न हो सका। मैं विशेष रूप से आभारी हूँ स्वतंत्र पत्रकार श्री यदुनाथ सिंह तोमर जी, डॉ. अरुण कुमार शर्मा जी की, जिन्होंने मुरैना की सांस्कृतिक धरोहरों की प्रामाणिक जानकारियाँ मुझे उपलब्ध करवाई।

अंत में मैं मेरे सहयोगी फैज़ अहमद और सुधीर राणा का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस पुस्तक को पारखी नज़र से संपादित करने के लिए मैं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर की आभारी हूँ। यह पुस्तक समर्पित है मुरैना जिला पंचायत के उन कर्मचारियों को जिनके सहयोग के बिना यह पुस्तक बन नहीं पाती।

मंगल मृदुल कामनाओं सहित
डॉ. कायनात क़ाज़ी

नरेन्द्र सिंह तोमर
NARENDRA SINGH TOMAR

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

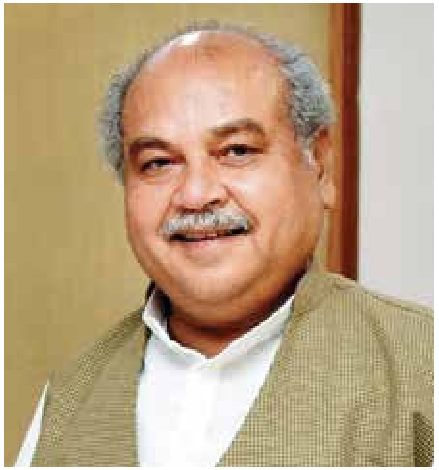

श्री नरेंद्र सिंह तोमर
केंद्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद द्वारा मुरैना की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों पर आधारित एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुरैना की पावन धरती गवाह है बदलते हुए युगों की, इस धरती को सींचती है निर्मल नदी चम्बल। प्रागैतिहासिक काल से लेकर सतयुग और द्वापर युग के निशान मिलते हैं यहां के देवस्थलों में। यह धरती है शिव की। ये धरती है बेहरारे वाली माता, बसैया वाली माता जी की। यहां देखने को मिलते हैं अद्‌भुत अकल्पनीय चमत्कार। यहां के जंगल और घाटियां समेटे है दैवीय चमत्कार। यह भूमि है पटिया वाले बाबा की। यहां पधारे थे शनि भगवान। इस पावन धरती को सजाया-संवारा गुर्जर, प्रतिहार और सिकरवार राजवंशों ने। ये भूमि अपने में छुपाए हुए है असंख्यक मूल्यवान जैन मूर्तियां, जो लगातार निकलती रहती हैं मुरैना जिले के अलग-अलग क्षेत्र में।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैंने इस पावन धरती में जन्म लिया और इसे फलते-फूलते देखा। मेरा सदा से प्रयास रहा है कि मुरैना केवल देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों तक में अपनी विशेषताओं के लिए जाना जाए, जिसके लिए बहुतेरे प्रयास भी किए गए हैं और अनेकानेक सुविधाओं के साथ क्षेत्र का सतत विकास हो रहा है।

मुरैना की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर को समेटे यह पुस्तक अपने आप में एक सराहनीय प्रयास है, मैं आशा करता हूं कि जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद मुरैना को पर्यटन मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान दिलवाने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखेगा।

शुभकामनाओं सहित!

(नरेन्द्र सिंह तोमर)

संदेश

श्री अंकित अस्थाना
कलेक्टर एवम् ज़िला दंडाधिकारी, मुरैना

भारत सदियों से विश्व गुरु रहा है। आज भारत बड़ी तेज़ी से विश्व शक्ति के रूप में उभर रहा है। पूरा विश्व आज हमारी ओर उम्मीद से देख रहा है। हमारे देश की ताक़त हमारी संस्कृति है और इस संस्कृति की आत्मा वास करती है उन ऐतिहासिक धरोहरों में जिनका निर्माण सदियों पहले हुआ था।

विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने देश की इन अमूल्य धरोहरों का ना सिर्फ़ संरक्षण और संवर्धन करें अपितु इनकी गौरव गाथाओं को जन सामान्य तक पहुँचाएँ। मुरैना जिले में स्थित छठी शताब्दी से लेकर नौवीं शताब्दी के मध्य निर्मित इन महान संरचनों का दस्तावेज़ीकरण होना आवश्यक था। इससे निश्चित ही ज़िले में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से जिले के पर्यटन को एक नई पहचान और ऊर्जा मिलेगी।

श्री अंकित अस्थाना
कलेक्टर एवम् ज़िला दंडाधिकारी, मुरैना

श्री सीता राम
श्री हनुमान चालीसा

संदेश

डॉ. इच्छित गढ़पाले
सीईओ जिला पंचायत, मुरैना

अपनी धरती और अपने लोगों के लिए जो बन पड़े वो करते जाना के संस्कार मैंने अपने पिता से विरासत में पाए हैं। मुझे यह जागृति विरासत में मिली है। इसीलिए मुझे जिस क्षेत्र में भी सेवा करने का अवसर मिला मैंने पूरे मनोयोग से वहाँ के लोगों, पर्यावरण और संस्कृति के लिए काम किया। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे मुरैना की ओजस्वी धरती पर कार्य करने का अवसर मिला। यह धरती है शिव की। यह धरती है चौंसठ योगनियों की। यह धरती है शूरवीर गुर्जर-प्रतिहार राजाओं की।

मैं इस पुस्तक के माध्यम से उन सभी दिव्य शक्तियों को नमन करता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय पर्यटन मानचित्र पर मुरैना अपनी एक अलग पहचान बनाएगा।

डॉ. इच्छित गढ़पाले
सीईओ जिला पंचायत,
मुरैना

अनुक्रमणिका

1. मुरैना एक परिचय 24
2. मुरैना का नामकरण 25
3. शनिचरा मंदिर 26
4. बटेश्वर मंदिर समूह 28
5. चौंसठ योगिनी मंदिर-मितावली 30
6. गढ़ी पढ़ावली 32
7. शिव मंदिर ककनमठ 34
8. लिखी छाज 36
9. राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य 38
10. ईको पार्क-देवरी 42
11. चम्बल नदी 44
12. पगारा बांध 46
13. रहु घाट 48
14. चम्बल के बीहड़ 50
15. पंडित राम प्रसाद बिस्मिल संग्रहालय 52
16. नरेश्वर मंदिर समूह 54
17. सबलगढ़ किला 56
18. पहाड़गढ़ किला 58
19. आमझिरी 60
20. बढ़ई कोट 62
21. जैन मंदिर ज्ञानोदय 64
22. टिकटोली जैन अतिशय क्षेत्र 66
23. श्री 1008 शांतिनाथ अतिशय, सिहोनिया 68
24. ईश्वरा महादेव मंदिर 70
25. करह धाम 72
26. हनुमान मंदिर, घिरौना 74
27. अलोपी शंकर मंदिर 76
28. माता बसैय्या मंदिर 78
29. बहरारा माता मंदिर 80
30. निरारा माता मंदिर 82

मुरैना एक परिचय

मुरैना जिले का विराट क्षेत्रफल गवाह है इस स्थान के वैभवपूर्ण इतिहास का। यहाँ की फ़िज़ाओं में बहती हैं कहानियाँ, जिनमें प्रागैतिहासिक काल के भित्ति चित्र हैं, वहीं सतयुग से लेकर द्वापर युग के निशान मिलते हैं। यहाँ की पहाड़ी गुफाएँ साक्षी हैं आदिमानवों के क्रमिक विकास की। यहाँ के मंदिर प्रमाण हैं नागों, गुप्तों, हूणों, वर्धनों, गुर्जरों, प्रतिहारों, चंदेलों और कच्छपघाटों के स्वर्णिम युगों के, जिनके समय में यहाँ अनेक देवालय बने।

मध्यप्रदेश राज्य का जिला मुरैना, जिसे इतिहास में पेच मुरैना भी कहा जाता था, कभी कपास प्रसंस्करण के लिए देश भर में प्रसिद्ध था।

यह चंबल नदी से लगभग 16 किमी दक्षिण पूर्व और ग्वालियर से 32 किमी उत्तर पश्चिम में एक पठारी क्षेत्र में स्थित है। आसपास के क्षेत्र पर पूर्व में श्योपुर और तोंवरघर रियासतों का कब्जा था। मुरैना जिला चंबल घाटी में राज्य की उत्तर-पश्चिमी सीमा पर स्थित है। निचले चंबल नदी के बेसिन में उत्तर में एक जलोढ़ पथ है, जो कई खड्डों से कटा हुआ है, और दक्षिण की ओर एक वन क्षेत्र है। जिला मुरैना का क्षेत्रफल 4773.30 वर्ग किलोमीटर है, जिले की पूर्व से पश्चिम तक लम्बाई 230 किलोमीटर, जिले के पूर्वी भाग में उत्तर से दक्षिण तक चौड़ाई 43 किलोमीटर तथा पश्चिमी भाग में 72 किलोमीटर है। जिले की समुद्र तल से ऊँचाई 150-300 किलोमीटर है।

मुरैना का नामकरण

मुरैना का नाम कैसे पड़ा इससे जुड़ी अनेक कहानियाँ यहाँ लोग सुनाते हैं। पहली कहानी के अनुसार द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण ने मुरा नामक दैत्य के आतंक से इस क्षेत्र को मुक्त करवाया था। मुरा के मर जाने की स्थिति में मुरा + न मिलकर मुरैना शब्द विकसित हो गया। दूसरी कहानी के अनुसार द्वापर युग में भगवान कृष्ण वृन्दावन से गाय चराने मुरैना-भू क्षेत्र में आते थे। यहाँ से गायों को मोड़कर वृन्दावन चले जाते थे। अतः मोड़ना शब्द ही विकसित होकर मुरैना हो गया है। तीसरी कहानी के अनुसार मुरैना के आसपास घना जंगल था जिसमें बड़ी संख्या में मोर पाए जाते थे। इसलिए इस क्षेत्र को मयूरवन कहा जाता था जो कि कालांतर में विकसित होकर मुरैना बना।

स्थानीय मान्यता के अनुसार मुगलकाल में राजमार्ग पर मुरैना, नूराबाद, छोडा, पोरसा आदि स्थानों पर सराय थीं। इस शहर का नाम मुरैना के छोटे से गाँव के नाम पर रखा गया था, जो वर्तमान शहर से लगभग 8 किमी दूर स्थित है।

वर्तमान मुरैना 19वीं शताब्दी के सिकरवारी और तंवरगढ़ से युक्त है। अंबाह क्षेत्र में सिकरवार राजपूतों की प्रमुख बसावट के कारण इसे सिकरवारी के नाम से जाना जाता था। इसी प्रकार जौरा क्षेत्र में तंवरों (तोमरों) के बसने के कारण जिले के मध्य भाग को तंवरगढ़ कहा जाता था।

जिला सिकरवारी, पूर्व ग्वालियर राज्य का हिस्सा था जो बाद में 1904 में जौरा-अलापुर के मुख्यालय के साथ तंवरघर में विलय कर दिया गया था जो वर्तमान में एक तहसील मुख्यालय है।

वर्ष 1948 में मध्य भारत के गठन के परिणामस्वरूप पूर्व ग्वालियर राज्य के श्योपुर जिले को मध्य भारत में शामिल किया गया था। मध्यप्रदेश के पुनर्गठन के बाद एक अलग जिला बन गया। दिनांक 22 मई 1998, श्योपुर, कराहल और विजयपुर तहसीलों को मुरैना जिले से बाहर कर दिया गया और एक नया जिला श्योपुर बनाया गया। मुरैना जिले में मुरैना, पोरसा, अंबाह, जौरा, कैलारस एवं सबलगढ़ तहसील शेष रहीं।

कुटवार गाँव में वर्ष 1927-28 में एक खुदाई के दौरान, 18,659 कांस्य सिक्कों का एक विशाल खजाना मिला, जिससे यह दृढ़ता से कहा गया है कि तीसरी और चौथी शताब्दी के दौरान यह क्षेत्र नागा राजाओं के शासन में था। नागों के बाद, गुप्तों, हूणों, वर्धनों, गुर्जरों, प्रतिहारों, चंदेलों और कच्छपघाटों ने सफलतापूर्वक इस क्षेत्र पर शासन किया।

इस वंश का प्रसिद्ध राजा कीर्तिराज था, जिसके काल में सिहोनिया के मन्दिरों का निर्माण हुआ। कच्छपघाटों के वंश के बाद तोमर राजपूतों आदि के कुलों ने 1526 ई. तक इस क्षेत्र पर शासन किया। ग्वालियर सरकार के आलापुर महल, आगरा सूबा तथा अवंतगढ़ तथा विजेपुर महल सूबा मंडल सरकार के अधीन थे, शेष क्षेत्र ग्वालियर सरकार के अन्तर्गत सम्मिलित थे।

अकबर द्वारा इस क्षेत्र पर आक्रमण के बाद की अवधि से लेकर 18वीं शताब्दी के अंतिम दशक तक यह मुगलों के अधीन रहा। सन् 1761 में पानीपत की लड़ाई के बाद, महादजी सिंधिया ने ग्वालियर पर कब्जा कर लिया और आसपास के क्षेत्रों में कदम रखा और मुरैना का इतिहास ग्वालियर का हिस्सा बन गया। 1 नवंबर 1956 को नए मध्यप्रदेश के गठन के परिणामस्वरूप मुरैना अलग जिला बन गया।

शनिचरा मंदिर

विश्व का सबसे प्राचीन मंदिर मुरैना जिले में ऐंती पर्वत पर स्थित है। ऐसी मान्यता है कि त्रेता युग में हनुमान जी ने रावण की लंका से शनि देव को बंधन मुक्त कर इस पर्वत पर फेंका था, तब से शनि देव यहां विराजमान हैं। जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व दिशा में शनिदेव मंदिर स्थित है। यहां पर पहुंचने के लिए मुरैना से बानमोर होते हुए तथा नूराबाद एवं मालनपुर के रास्ते रिठौरा से शनि मंदिर पहुंचा जा सकता है। मंदिर परिसर में गुप्त गंगा से पानी अनवरत बहता रहता है। पूर्व में लोग कुंड में स्नान किया करते थे। मंदिर में एक हनुमान जी प्रतिमा पर्वत उठाए हुए हैं। इस मंदिर के ठीक पीछे शिवलिंग विराजमान है तथा कुंड के बगल में काली माता, गणेश मंदिर और शनिदेव की प्रतिमा गर्भगृह में स्थापित हैं। दाहिनी ओर राधा-कृष्ण की प्रतिमा आकर्षित करती है तथा शनि मंदिर कुछ दूरी पर लेटे हनुमान मंदिर तथा शिव मंदिर आस्था के केंद्र हैं।

उज्जैन के महाराजा विक्रमादित्य ने इस मंदिर का निर्माण कराया था। बताते हैं कि जब उज्जैन में सूखा और अकाल पड़ा तो शास्त्रों के ज्ञाता एवं मर्मज्ञ लोगों ने उन्हें परामर्श दिया कि आप भगवान शनिदेव की शरण में जाएं और प्रजा के लिए सुख और शांति की कामना करें। तब राजा विक्रमादित्य भगवान शनिदेव की शरण में आए और यहां पर आराधना कर भगवान शनिदेव को प्रसन्न किया और शनिदेव उनके सपने में आए थे। शनिदेव के दर्शन के बाद राजा विक्रमादित्य ने यहां पर भव्य मंदिर निर्माण कराया। तब से शनिचरी अमावस्या पर लाखों भक्त अपनी परेशानियों को लेकर भगवान की शरण में आते हैं।

यहाँ से एक कहानी के तार त्रेता युग से जुड़े हैं। कहते हैं यदि त्रेता युग में हनुमान जी शनि भगवान को लंका से यहाँ नहीं फेंकते तो भगवान श्रीराम कभी लंका पर विजय नहीं पाते। शनि भगवान् जहाँ ऐंती पर्वत पर आकर गिरे वहीं आज शनिचरा मंदिर स्थित है।

बटेश्वर मंदिर समूह

मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में पढ़ावली ग्राम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित बटेसर में मंदिरों के भग्नावशेष एक पहाड़ी के पश्चिमी तलहटी के एक विस्तृत भूभाग पर फैले हुए हैं। पाषाण निर्मित इन मंदिरों के अवशेषों में मुख्य रूप से द्वार, सोपानयुक्त तालाब, मंदिर स्थापत्य के भाग, हिन्दू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं एवं स्तम्भों के अवशेष हैं, जिनको स्थापत्य कला की दृष्टि से परवर्ती गुप्तकाल से प्रतिहारकाल के मध्य रखा जा सकता है, जिसका समय काल छठवीं ई. से नौवीं ई. तक है ।

बटेसर में स्थित मंदिरों के ये अवशेष मंदिर कला के क्रमिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन मंदिरों में केवल एक गर्भगृह व छत सपाट है, जबकि कालान्तर में गर्भगृह के ऊपर एक शिखर का भी निर्माण होने लगा था। यहां स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर प्रतिहार कालीन मंदिर निर्माण कला के समस्त लक्षणों को प्रदर्शित करता है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अथक प्रयासों से यहां हाल ही में कुछ मंदिरों का पुनर्निर्माण कर उन्हें वास्तविक स्वरूप प्रदान किया गया है।

चौंसठ योगिनी मंदिर-मितावली

चौंसठ योगिनी मंदिर मुरैना से करीब 40 किलोमीटर की दूरी पर ग्वालियर-आगरा मार्ग पर मितावली गांव के पास स्थित है। हरे-भरे जंगल और प्राकृतिक सुंदरता से घिरी एक पहाड़ी के ऊपर करीब 150 फीट की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर संभवतः मुरैना के आसपास की सबसे प्राचीन और सुंदर संरचना है। मुरैना से करीब 13 किलोमीटर दूर आगरा राष्ट्रीय मार्ग पर टेकरी गांव है यहां से बायें मुड़कर चलें तो 27 किलोमीटर पर रिठौरा कला गांव आता है। रिठौरा कला से 5 किलोमीटर पहले बाई ओर जाने वाली सड़क आपको मितावली गांव ले जाएगी। इसी गांव के नाम पर इस मंदिर का नाम मितावली मंदिर पड़ा है, जो गांव के बाहरी क्षेत्र में स्थित है वहां पहुंचकर आपको इस मंदिर की खूबसूरती के दर्शन करने के लिए करीब 200 सीढ़ियां चढ़नी होंगी। शिखर पर पहुंचते ही आप

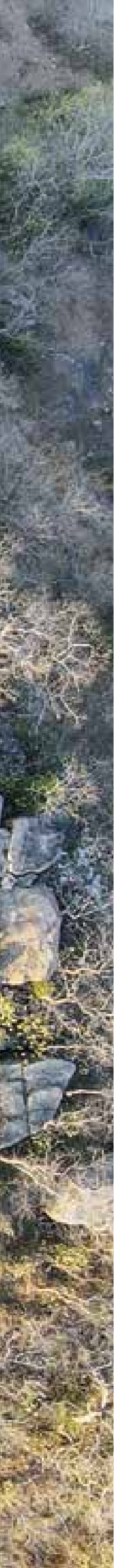

किसी नई दुनिया की सैर करने लगेंगे, आपको ऐसा महसूस होगा। वहां से आप मंदिर के आसपास के क्षेत्र का विहंगम दृश्यों का अवलोकन कर सकते हैं ।

यह मंदिर वृत्ताकार है। इसमें अनेक कमरे हैं। मध्य में एक बड़ा हॉल है और यह 100 से अधिक स्तंभों पर टिका है। सेंट्रल हॉल के चारों ओर 64 कमरे बनाए गए हैं। सभी कमरों की दीवारें एक ही हैं पर दरवाजे अलग-अलग और हर दरवाजे में दो स्तंभ हैं। कमरों की छत भ्रम पैदा करती हुई काफी नीचे प्रतीत होती हैं। प्रत्येक कमरे में एक शिवलिंग की स्थापना की गई है। मुख्य शिवलिंग सेंट्रल हॉल में स्थापित है, जिसे गर्भगृह कहते हैं और यह लगभग साढ़े 3 फीट ऊंचा और डेढ़ फीट मोटा है। हॉल को टिकाए रखने के लिए भीतरी घेरे में 13 और बाहरी घेरे में 17 स्तंभ हैं। एक स्तम्भ में कोई लिपि अंकित है जिसको आज तक नहीं पढ़ा जा सका है। इस मंदिर का निर्माण भूरे बलुआ पत्थरों से किया गया है। यह भारतीय संसद की भांति लगता है और इसी वजह से कई लोगों का यह मानना है कि भारतीय संसद भवन के निर्माण की प्रेरणा इसी मंदिर से मिली है, हालांकि इस बात का कोई प्रमाण उनके पास नहीं है। वर्तमान में यहां एक भी प्रतिमा नहीं है। पर कहा जाता है कि हर कमरे में भगवान शिव के साथ देवी योगिनी की भी प्रतिमा थी। इस कारण से इसे 64 योगिनी मंदिर भी कहा जाता है। कहते हैं कि देवी योगिनी की कुछ प्रतिमाएं चोरी हो गईं वहीं बाकी को संग्रहालय भेज दिया गया। इतिहासकारों के मुताबिक वैद्यशाला विश्वविद्यालय जिसके अवशेष आज भी दिखाई देते हैं, इसका आठवीं सदी के मंदिर में अस्तित्व में था। माना जाता है कि उस विश्वविद्यालय में ज्ञान अर्जन के साथ तंत्र विद्या का भी अभ्यास कराया जाता था और संबंधित विषयों जैसे ज्योतिष शास्त्र का भी वह केंद्र था। इस मान्यता की पुष्टि वहां देवी योगिनी की प्रतिमाएं और शिवलिंगों की उपस्थिति से होती है, क्योंकि तंत्र विद्या हासिल करने के लिए इनकी पूजा की जाती है। यह भी माना जाता है कि यहां बड़ी संख्या में साधु-संत एकत्रित होकर मोक्ष की प्राप्ति के लिए हवन और यज्ञ किया करते थे। संतों के लिए यह मंदिर अपने शांत वातावरण के लिए साधना का आदर्श स्थल था। यज्ञशाला और दूसरी संबंधित चीजों के अवशेष यहां आज भी देखे जा सकते हैं ।

इस तथ्य का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि इस मंदिर का निर्माण किसने कराया। कुछ लोक साहित्य के अनुसार उस क्षेत्र के राजा देवपाल ने निर्माण कराया था। वहीं कुछ लोग कहते हैं कि इसे भूतों ने बनवाया था और इसी कारण से यहां तंत्र विद्या सीखी जाती है। आजकल यहां बहुत सारे लोग प्राचीन अदभुत स्थापत्य कला देखने आते हैं। वहीं बहुत से बाहरी और स्थानीय लोग पूजा-अर्चना के लिए भी आते हैं, क्योंकि यह माना जाता है कि जो कोई सच्चे मन से यहां प्रार्थना करता है उसकी इच्छा जरूर पूरी होती है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर भगवान गणेश की मूर्ति है जो आपका मंदिर में स्वागत करती हैं। बाहरी दीवारों पर उस समय की स्थापत्य कला का सुंदर नमूना है।

गढ़ी पढ़ावली

गढ़ी पढ़ावली के इस देवालय में मूलरूप से गर्भगृह एवं एक मण्डप का ही समावेश था, जिसमें वर्तमान में केवल प्रवेश द्वार पर स्थित मुखमण्डप ही शेष रह गया है। मंदिर के अवशेषों में प्राप्त एक विशाल नंदी की प्रतिमा से ऐसा प्रतीत होता है कि ऊंचे अधिष्ठान पर निर्मित यह एक शिव मंदिर था। मंदिर के अंतः भाग में दीवारों पर हिन्दू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं उत्कीर्ण हैं जिनमें - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, सूर्य, गणेश, काली एवं विष्णु के अवतारों का अंकन प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त दीवारों पर भागवत, रामायण एवं पुराणों से संबंधित प्रतिमाओं को उत्कीर्ण किया गया है जो उस काल की कला एवं संस्कृति को प्रतिबिम्बित करती है।

मंदिर कला के विभिन्न लक्षणों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका निर्माण 10वीं शती ई. में किया गया था। कालान्तर में इस मंदिर को गोहद के जाट राणाओं (19वीं शती ई.) द्वारा गढ़ी में परिवर्तित कर दिया गया है।

शिव मंदिर ककनमठ

ककनमठ मंदिर के नाम से विख्यात यह अद्‌भुत मंदिर भग्नावस्था में भी अपने मूर्ति शिल्प को संजोये हुए है। एक बड़े चबूतरे पर निर्मित इस मंदिर की वास्तु योजना में गर्भगृह, स्तंभयुक्त मण्डप एवं आकर्षक मुखमण्डप है, जिसमें प्रवेश हेतु सामने की ओर सीढ़ियों का प्रावधान है। गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग इस मंदिर के मुख्य देवता हैं। मंदिर के गर्भगृह के ऊपर विशाल शिखर (लगभग 100 फीट ऊँचा) है, जो अब जीर्णशीर्ण अवस्था में है एवं इसके आंतरिक पाषाण ही अब दृष्टिगोचर हैं। वास्तविक स्वरूप में इस मंदिर के चारों ओर अन्य लघु मंदिरों का भी निर्माण किया गया था जिनके कुछ अवशेष देखे जा सकते हैं। मंदिर का नाम रानी ककनवती के नाम पर जाना जाता है जो संभवतः कच्छपघात शासक कीर्तिराज की रानी थी, जिसके आदेश पर ही इस मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में किया गया था।

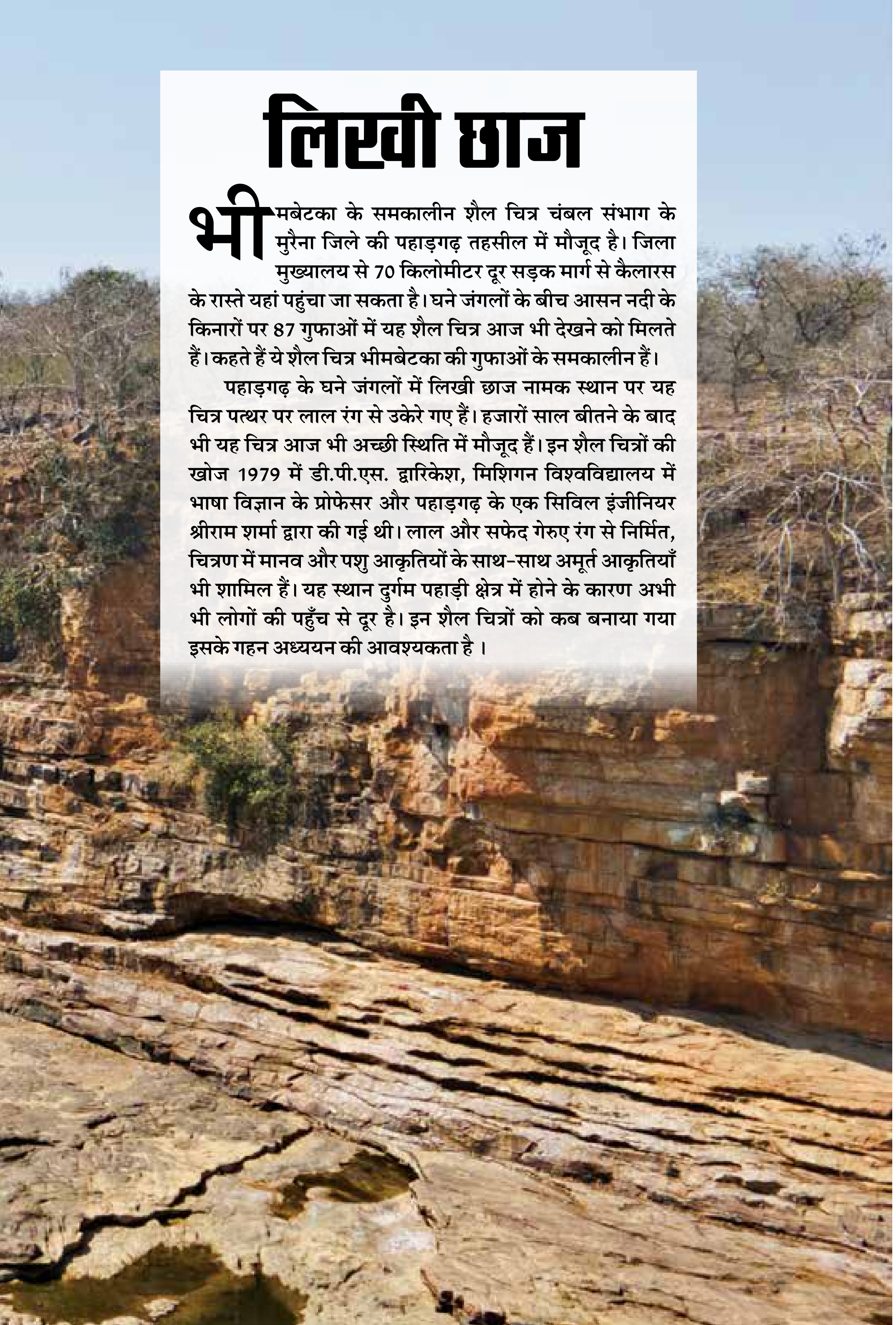

लिखी छाज

भीमबेटका के समकालीन शैल चित्र चंबल संभाग के मुरैना जिले की पहाड़गढ़ तहसील में मौजूद है। जिला मुख्यालय से 70 किलोमीटर दूर सड़क मार्ग से कैलारस के रास्ते यहां पहुंचा जा सकता है। घने जंगलों के बीच आसन नदी के किनारों पर 87 गुफाओं में यह शैल चित्र आज भी देखने को मिलते हैं। कहते हैं ये शैल चित्र भीमबेटका की गुफाओं के समकालीन हैं।

पहाड़गढ़ के घने जंगलों में लिखी छाज नामक स्थान पर यह चित्र पत्थर पर लाल रंग से उकेरे गए हैं। हजारों साल बीतने के बाद भी यह चित्र आज भी अच्छी स्थिति में मौजूद हैं। इन शैल चित्रों की खोज 1979 में डी.पी.एस. द्वारिकेश, मिशिगन विश्वविद्यालय में भाषा विज्ञान के प्रोफेसर और पहाड़गढ़ के एक सिविल इंजीनियर श्रीराम शर्मा द्वारा की गई थी। लाल और सफेद गेरुए रंग से निर्मित, चित्रण में मानव और पशु आकृतियों के साथ-साथ अमूर्त आकृतियाँ भी शामिल हैं। यह स्थान दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में होने के कारण अभी भी लोगों की पहुँच से दूर है। इन शैल चित्रों को कब बनाया गया इसके गहन अध्ययन की आवश्यकता है ।

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य चम्बल नदी के एक बड़े भाग में स्थित है, जो राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के तीन राज्यों में लगभग 1800 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है। यह भारत में पहला और एकमात्र त्रि-राज्यीय नदी संरक्षित क्षेत्र है। चम्बल नदी के 960 किलोमीटर के लगभग 600 हिस्से को तीन राज्यों ने अपने संबंधित क्षेत्रीय अधिकार क्षेत्र में राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य घोषित किया है।

राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य सबसे घड़ियालों के लिए महत्वपूर्ण आवासों में से एक है। यहाँ विश्व स्तर पर खतरे में पड़े कई जीव अभी भी जीवित हैं। इसकी समृद्ध जैव विविधता मगरमच्छ की दो प्रजातियों घड़ियाल और मगर, ताजे पानी के कछुओं की 9 प्रजातियों, चिकने-लेपित ऊदबिलाव, गंगा नदी की डॉल्फ़िन, स्किमर्स, ब्लैक बेलीड टर्न, सारस क्रेन और ब्लैक-नेक्ड स्टॉर्क का घर है। घड़ियाल भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से भारत में सबसे गंभीर रूप से लुप्तप्राय जलीय जानवर है। यह वन्य जीवन (संरक्षण) अधिनियम, 1972 की अनुसूची - 1 में शामिल है और लुप्तप्राय प्रजातियों की आई यू सी एन की लाल सूची में गंभीर रूप से लुप्तप्राय जीव के रूप में सूचीबद्ध है।

दुनिया भर से सैलानी राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य में घड़ियालों और अनेक प्रकार के अप्रवासी पक्षियों को देखने आते हैं। यहाँ 180 प्रजाति के परिंदे भी दूरदराज से प्रवास के लिए आते हैं। अप्रवासी पक्षियों का आना नवम्बर माह से प्रारंभ हो जाता है और यह फरवरी के अंत तक रहते हैं। इसके बाद यहां से प्रस्थान कर जाते हैं। इस अभ्यारण में बोटिंग और गाइड की सुविधा उपलब्ध है।

ईको पार्क-देवरी

मुरैना के देवरी क्षेत्र में धौलपुर आगरा हाईवे पर स्थित है ईको पार्क। पूरे मध्यप्रदेश राज्य में अपनी तरह का एकमात्र केंद्र है। यह पार्क जनता को जलीय सरीसृपों के जीवन चक्र का अनुभव करने का मौका देता है। ईको-सेंटर, देवरी राष्ट्रीय चम्बल अभयारण्य का एक हिस्सा है। चम्बल नदी में घड़ियाल, कछुआ, डॉल्फ़िन, मगरमच्छ आदि की कई प्रजातियाँ हैं जो अत्यधिक लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची में आती हैं। ईको-पार्क घड़ियाल, कछुआ और मगरमच्छ के प्रजनन और पुनर्वास में मदद करता है। वन विभाग के सक्रिय प्रयासों के कारण, ईको-पार्क ने घड़ियाल की लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाने और उनकी रक्षा करने को लेकर अनेक प्रयास किए हैं। चम्बल नदी ही भारत में एकमात्र ऐसी नदी है जहाँ घड़ियाल पाए जाते हैं। ये घड़ियाल अप्रैल माह में अपने घौंसलों में अंडे देते हैं और जून माह में अत्यधिक वर्षा होने के कारण अंडे और उनसे निकले नवजात बच्चे पानी के साथ बह जाते हैं।

वर्ष 1981 से इस ईको सेंटर के कर्मचारी चम्बल नदी में घड़ियालों के घौंसलों से अण्डों को सावधानीपूर्वक ब्रीडिंग सेंटर में लेकर आते हैं और उन्हें इन्क्यूबेशन चेम्बरों में रखते हैं। यहाँ कृत्रिम रूप से उन्हें अनुकूल वातावरण दिया जाता है जिससे अण्डों से बच्चे निकल आएं। बच्चे निकल आने पर उन्हें आयु के अनुसार अलग-अलग जलकुंडों में रखा जाता है और फिर जब वह स्वस्थ होकर नदी में छोड़ने लायक हो जाते हैं तो उन्हें चम्बल नदी में छोड़ दिया जाता है। यह पूरा कार्य वैज्ञानिक रूप से विशेषज्ञों की देखरेख में किया जाता है। घड़ियाल ईको-पार्क में दुनिया भर से कई पर्यटक, रिसर्च स्कॉलर के लिए आते हैं। यह दुनिया की सबसे दुर्लभ जगहों में से एक है जहां उनके प्रयासों से घड़ियालों और कछुओं का जीवन आसान और सुरक्षित हुआ है।

B-6
T-6

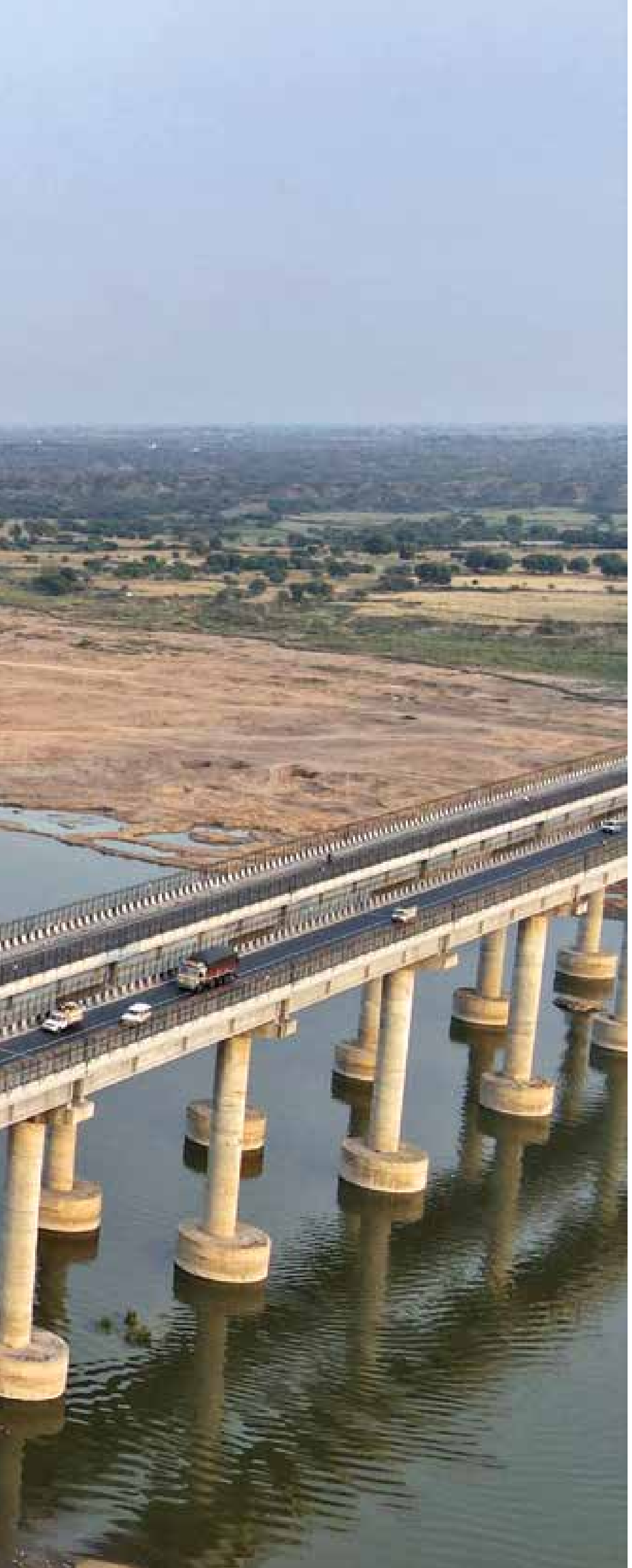

चम्बल नदी

चम्बल नदी उत्तरी भारत में स्थित है और तीन भारतीय राज्यों से होकर बहती हैः मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश। चम्बल नदी मध्यप्रदेश में विंध्य पर्वतमाला के दक्षिण ढलान पर, मानपुर, इंदौर के पास, महू शहर के दक्षिण में जानापाव से निकलती है।

चम्बल और इसकी सहायक नदियाँ उत्तर-पश्चिमी मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र में बहती हैं, जबकि इसकी सहायक नदी बनास, जो अरावली पर्वतमाला से निकलती है और दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में बहती है। यह भिंड और इटावा जिलों की सीमा पर उत्तरप्रदेश राज्य में भरेह के पास पचनदा में चम्बल, कुँवारी, यमुना, सिंध, पाहुज सहित पांच नदियों के संगम पर मिलती है।

मध्यप्रदेश में चम्बल नदी जिन क्षेत्रों को छूती है उन्हें चम्बल संभाग के रूप में जाना जाता है। चम्बल संभाग मध्यप्रदेश के उत्तरी छोर पर स्थित है। इसके अंतर्गत तीन जिले क्रमशः श्योपुर, मुरैना तथा भिण्ड आते हैं। इसका मुख्यालय मुरैना में है। चम्बल संभाग का गठन 1980 में हुआ था। इससे पूर्व यह जिले ग्वालियर संभाग के अंतर्गत आते थे। चम्बल नदी चम्बल संभाग एवं राजस्थान तथा चम्बल संभाग एवं उत्तरप्रदेश की सीमा रेखा बनाती है। चम्बल संभाग का कुल क्षेत्रफल 16,061 वर्ग किलोमीटर है, जिसमें श्योपुर का क्षेत्रफल 6,606 वर्ग किलोमीटर, मुरैना का क्षेत्रफल 4,996 वर्ग किलोमीटर तथा भिण्ड का क्षेत्रफल 4,459 वर्ग किलोमीटर शामिल है।

पगारा बांध

पगारा बांध मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के जौरा शहर से लगभग 13 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। बांध आसन नदी पर स्थित है। यह एक चिनाई बांध है, जिसका निर्माण 1931 में हुआ था। इस बाँध का निर्माण इस क्षेत्र में सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति करने के लिए किया गया था।

बांध का निर्माण आसपास के गांवों की सिंचाई के लिए किया गया था। लेकिन, वर्तमान में बांध के पानी का उपयोग पीने के लिए भी किया जाता है। इसके साथ ही बांध के पानी का उपयोग मत्स्य विभाग और स्थानीय मछुआरों द्वारा मछली पालन के लिए भी किया जाता है। पगारा बांध में मछलियों की विविधता देखने को मिलती है। बांध का जलगृह - क्षेत्र एक किलो स्कवायर मीटर के दायरे में फैला हुआ है। यहाँ की सुंदरता देखते ही बनती है। लोग यहाँ सप्ताहांत में पिकनिक मनाने आते हैं। पगारा बांध के आसपास के क्षेत्र में प्राकृतिक सौंदर्य प्रचुर मात्रा में है, जो काफी मनमोहक है।

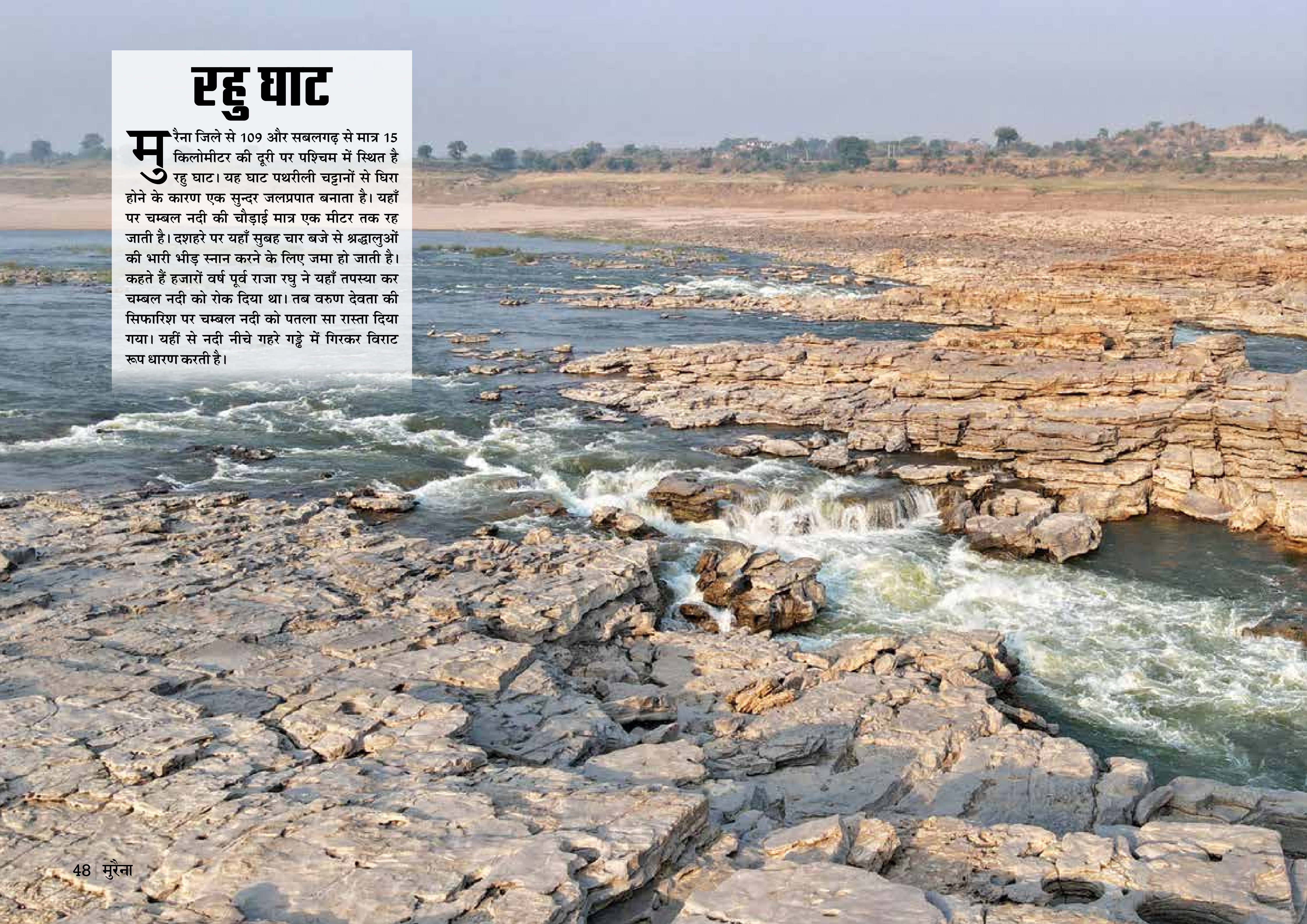

रहु घाट

मुरैना जिले से 109 और सबलगढ़ से मात्र 15 किलोमीटर की दूरी पर पश्चिम में स्थित है रहु घाट। यह घाट पथरीली चट्टानों से घिरा होने के कारण एक सुन्दर जलप्रपात बनाता है। यहाँ पर चम्बल नदी की चौड़ाई मात्र एक मीटर तक रह जाती है। दशहरे पर यहाँ सुबह चार बजे से श्रद्धालुओं की भारी भीड़ स्नान करने के लिए जमा हो जाती है। कहते हैं हजारों वर्ष पूर्व राजा रघु ने यहाँ तपस्या कर चम्बल नदी को रोक दिया था। तब वरुण देवता की सिफारिश पर चम्बल नदी को पतला सा रास्ता दिया गया। यहीं से नदी नीचे गहरे गड्ढे में गिरकर विराट रूप धारण करती है।

चम्बल के बीहड़

मध्य भारत में चम्बल क्षेत्र दुनिया के सबसे जटिल क्षेत्रों में से एक है। हालाँकि मध्यप्रदेश के लिए चम्बल प्रमुख जीवन रेखा नदी है, लेकिन मुरैना के लिए हर वर्ष मुसीबत बनकर आती है। हर वर्ष मानसून में चम्बल नदी ख़तरे के निशान से ऊपर बहती है। ऐसे में नदी के आसपास के अनेक गांव जलमग्न हो जाते हैं। जब बारिश का पानी उतरता है तो अपने साथ मिट्टी भी बहा ले जाता है और पीछे छोड़ जाता है ऐसे लहरदार बाढ़ के मैदान, नालियाँ, और दुर्गम खड्डु जिनसे बीहड़ बनता है।

इस विशेष क्षेत्र में, लगभग 4,800 वर्ग किमी भूमि गंभीर रूप से विच्छेदित खड्डों से प्रभावित हुई है। चम्बल के बीहड़ एक प्रकार के नदीय अपरदन लक्षण हैं और अर्द्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में बहने वाली नदियों और नदियों द्वारा निरंतर ऊर्ध्वाधर कटाव के परिणामस्वरूप बनते हैं। चंबल के बीहड़ों का कटाव वास्तव में एक धीमी प्राकृतिक आपदा है और क्षेत्र के निवासियों के लिए एक बड़ा खतरा है। बीहड़ों का निर्माण धीरे-धीरे प्रत्येक वर्ष मूल्यवान कृषि भूमि को अपनी चपेट में ले लेता है।

पंडित राम प्रसाद बिस्मिल संग्रहालय

मुरैना- शहर में सिटी कोतवाली के समीप अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल शहीद संग्रहालय स्थित है। पूर्व में यह जिला पुरातत्व संग्रहालय के नाम से जाना जाता था और यह छोटे से भवन में संचालित हुआ करता था। यह संग्रहालय 1987 में एक बड़े से हॉल में संचालित हुआ, जिसमें जिले भर से लाई गई पुरातत्व महत्व की मूर्तियों को प्रदर्शन के लिए रखा गया। छोटी-बड़ी तमाम प्रकार की तोपों को एवं तोप के गोले संग्रहालय की शोभा बढ़ाते थे। सरकार ने इस ओर ध्यान दिया। इसका श्रेय जाता है केंद्रीय कृषिमंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी को। पहली बार यहां से सांसद के रूप में निर्वाचित हुए और उन्होंने अपनी सांसद निधि से नवीन भवन एवं विस्तृत एरिया का प्रस्ताव जिला प्रशासन के सामने रखा। इसका कार्य 2008 से प्रारंभ हुआ। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के मुख्य आतिथ्य में एवं केंद्रीय मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी की अध्यक्षता में 22 फरवरी 2014 में नवीन भवन का लोकार्पण किया गया। इसका नाम जिला पुरातत्व संग्रहालय से परिवर्तित कर अमर शहीद पंडित राम प्रसाद बिस्मिल संग्रहालय रखा गया। इस संग्रहालय में चंबल संभाग के तीनों जिले भिंड, मुरैना एवं श्योपुर के पुरातत्व सांस्कृतिक विरासत की मूर्तियों को प्रदर्शित किया गया है। इस संग्रहालय में वैष्णव शैली, शैव शैली, साहित्य गैलरी, आयुध गैलरी एवं विविध गैलरियां हैं।

प्रवेश द्वार पर तोप, शार्दुल और इंजीनियरिंग के छात्रों द्वारा निर्मित रेल इंजन की प्रतिमूर्ति एक परिसर में मौजूद है। संग्रहालय के अंदर कारगिल विजय स्मारक, प्राचीन कला दीर्घा में सहरिया जनजाति का जीवन, फसलों, खेती फोटो प्रदर्शनी द्वारा दिखाया गया है। संग्रहालय भवन के ठीक पीछे ओपन थिएटर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति के लिए निर्मित है, जहां लोग बैठकर कार्यक्रम का आनंद लेते हैं।

नरेश्वर मंदिर समूह

जिला मुख्यालय से करीब 50 किलोमीटर की दूरी पर पूर्व में नरेश्वर गांव के अवशेष मात्र विद्यमान हैं। नरेश्वर गांव में तो सभ्यता के नाम पर यह मंदिर बचा है, बाकी पूरी बस्ती जमींदोज हो चुकी है। आज अरावली के पथरीले निर्जन पठार को देख कोई अंदाज़ा भी नहीं लगा सकता है कि सदियों पहले यहाँ एक सभ्यता निवास करती थी। कभी यहाँ तमोलियों की बस्तियां थीं। इन गांवों की बसावट गुर्जर प्रतिहारों के समय आठवीं सदी के उत्तरार्ध में हुई थी। उस समय गुर्जर प्रतिहारों के नागभटट शासन की इस क्षेत्र में सत्ता थी। उस समय के प्रतिहारों ने ही इस अंचल में पान की खेती व किसानों को श्रेय दिया। ऐतिहासिक साहित्य के प्रमाणों के मुताबिक यहां बारहमासा पान होता था। मवई व नरेश्वर में पैदा किया गया पान न केवल स्थानीय बाजार की पूर्ति करता था, बल्कि गुजरात के बंदरगाह के माध्यम से विदेश भी जाता था। तत्कालीन अरब साहित्यकार वलाधुरी व सुलेमान ने यहां की पान की मंडियों की चर्चा अपने यात्रा वृत्तांतों में की है। तमोली जो मूलतः पान की खेती और व्यवसाय के लिए जाने जाते हैं, वे यहां काफी संपन्न थे। उनकी संपन्नता की अनकही कहानी यहाँ के खंडहरों के रूप में आज भी मौजूद है। इन बस्तियों का स्वर्णिम समय गुर्जर प्रतिहार काल से लेकर ब्रिटिश शासन की स्थापना तक था। इसके अलावा वर्तमान मध्यप्रदेश शासन के दस्तावेजों में इस अंचल को मवई बीट कहा जाता है। यह गांव प्रदेश के सबसे प्राचीनतम गांवों में एक है। यहां स्थित है नरेश्वर मंदिर। अरावली पर्वत श्रृंखला के कठोर पत्थरों को काट कर भगवान नरेश्वर का मंदिर बनवाया गया था। मानसून के समय यह स्थान छोटे-छोटे झरनों से सुशोभित हो जाता है।

सबलगढ़ किला

सबलगढ़ किला मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में इसी नाम के कस्बे में स्थित है जिसका इतिहास बयाना के जदुवंशी राजा विजय पाल के मालवा तक फैले विस्तृत राज्य के समय से शुरू होता है। सबलगढ़ का शाब्दिक अर्थ ताकतवर का किला होता है। सन् 1196 ई. में गौरी के हाथों तिमनगढ़ के पतन के साथ ही सबलगढ़ क्षेत्र भी जदुवंशी राजाओं के हाथ से निकल गया, जिस पर पुनः राजा पृथ्वीराज ने अधिकार किया। राजा गोपाल दास के पुत्र तुरसाम बहादुर को सबलगढ़ की जागीर मिली जिसके वंशजों ने राजा कुंवरपाल के समय में विद्रोह किया जिसे कड़ाई से दबा दिया गया और सबलगढ़ करौली के अधीन बना रहा। राजा गोपाल सिंह जी ने दीवान और कामदार नवल सिंह और खंडेराव की सलाह पर सबलगढ़ के किले में महल का निर्माण कराया, साथ ही नवल सिंह और खांडेराव की हवेलियां और कुछ मंदिर भी बनवाए। राजा गोपाल सिंह जी के समय उनका राज्य उत्तरपूर्व में ग्वालियर से पांच कोस पहले तक तथा दक्षिण में विजयपुर और मांगरोल तक फैला हुआ था। उंटगिर के किलेदार अमरगढ़ के ठाकुर, जो सबलगढ़ के किलेदार भी थे, के विश्वासघात की वजह से बिना किसी विशेष विरोध के सबलगढ़ पर ग्वालियर के सिंधिया का कब्जा हो गया, जिसे 1804 में एक बार ईस्ट इंडिया कंपनी ने लिया, लेकिन ग्वालियर के साथ हुई संधि से 1809 के लगभग पुनः सिंधिया को लौटा दिया। सबलगढ़ किला राजा गोपाल दास के समय में अपने पूर्ण वैभव में था जिसे राजा माणक पाल के समय में करौली जदुवंशी राजाओं के हाथ से निकल गया।

आज इस किले का अधिकांश हिस्सा जर्जर अवस्था में है। इस किले की स्थापत्य कला देखने लायक है।

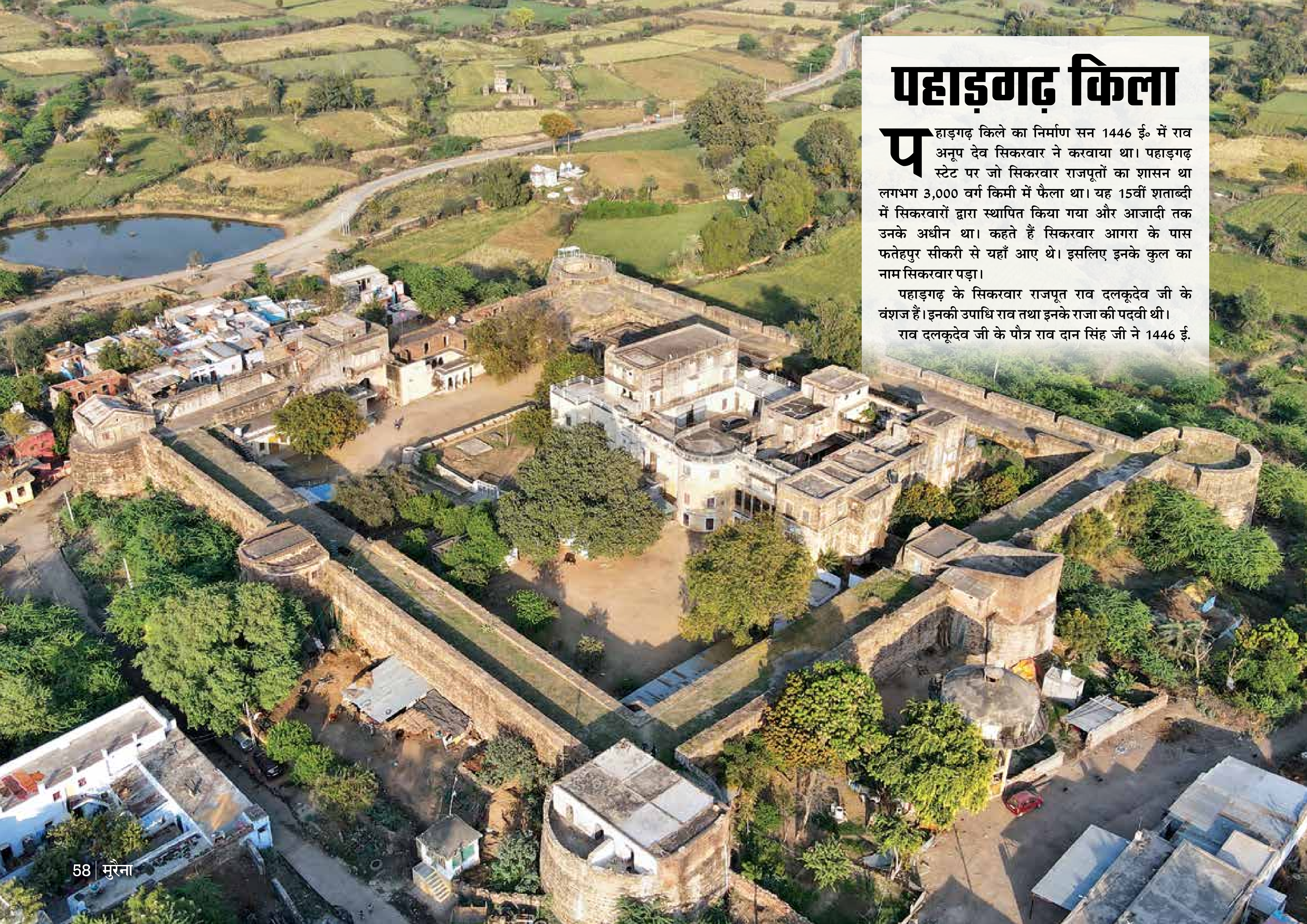

पहाड़गढ़ किला

पहाड़गढ़ किले का निर्माण सन 1446 ई० में राव अनूप देव सिकरवार ने करवाया था। पहाड़गढ़ स्टेट पर जो सिकरवार राजपूतों का शासन था लगभग 3,000 वर्ग किमी में फैला था। यह 15वीं शताब्दी में सिकरवारों द्वारा स्थापित किया गया और आजादी तक उनके अधीन था। कहते हैं सिकरवार आगरा के पास फतेहपुर सीकरी से यहाँ आए थे। इसलिए इनके कुल का नाम सिकरवार पड़ा।

पहाड़गढ़ के सिकरवार राजपूत राव दलकूदेव जी के वंशज हैं। इनकी उपाधि राव तथा इनके राजा की पदवी थी।

राव दलकूदेव जी के पौत्र राव दान सिंह जी ने 1446 ई.

में अपनी राजधानी सरसैनी से बदलकर पहाड़गढ़ में स्थापित की और एक किले का निर्माण करवाया जो वर्तमान में मौजूद है। पहाड़गढ़ के शासक राव नारायणदास सिकरवार ने खानवा के युद्ध में महाराणा सांगा की सहायता की थी।

यहीं के शासक राव दलेल सिंह सिकरवार ने मुग़ल बादशाह औरंगजेब के विरुद्ध महाराज छत्रसाल बुंदेला को 17,000 राजपूत सैन्य सहायता दी थी, जिससे महाराज छत्रसाल बुंदेला युद्ध जीत गये। मध्यप्रदेश के सिकरवार राजपूतो के पास 13 जागीरें थीं जिनमें पहाड़गढ़ सबसे बड़ी जागीर थी।

इस किले में आज भी राज परिवार निवास करता है। किले में लगभग 200 कमरे हैं। यह किला एक ऊँचे पहाड़ पर बना है, जहाँ से पूरी घाटी का नज़ारा दिखाई देता है। किले के एक हिस्से में प्राथमिक पाठशाला, डाकघर और बैंक हैं, बाकी हिस्से में राज परिवार का आवास है। किले के पीछे एक तालाब है। यह एक निजी किला है लेकिन इसके दरवाजे आमजन के लिए भी खुले रहते हैं।

आमझिरी

पहाड़गढ़ से पश्चिम दिशा में बढ़ई कोट के रास्ते में जंगल के बीचोबीच पड़ता है ये अद्‌भुत नज़ारा। इस स्थान का नाम आमझिरी इस स्थान की विशेषता के कारण पड़ा। यहाँ दूर-दूर तक, जहाँ तक नज़र जाती है, एक फलदार वृक्ष दिखाई नहीं देता। यह बियावान जंगल अरावली के पठार पर बसा हुआ है। इस जंगल में कंटीली झाड़ियों के सिवा कोई पेड़ दिखाई नहीं देता। ऐसे में पठार के अंतिम छोर पर एक झिरी में आम के पेड़ का उग आना किसी चमत्कार से कम नहीं और प्रकृति ने उस पेड़ के जीवित रहने के लिए पानी के एक प्राकृतिक स्रोत का भी प्रबंध कर रखा है। बस लोग यही देखने इस स्थान पर आते हैं। यहाँ एक छोटा-सा आश्रम है जिसके दरवाज़े हमेशा खुले रहते हैं। यहाँ आम के पेड़ की जड़ के पास दो शिवलिंग भी मौजूद हैं जिन पर अविरल जलधारा बहते हुए जलाभिषेक किया करती है। यहाँ एक हनुमानजी का मंदिर और पवित्र कुंड मौजूद है, जिससे निर्मल जल बहता है।

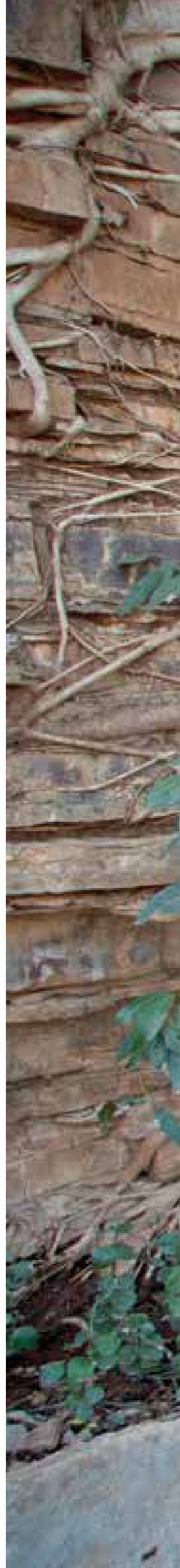

बढ़ई कोट

पहाड़गढ़ के दुर्गम जंगलों में ईश्वरा महादेव से आगे पश्चिम में पड़ता है बढ़ई कोट का किला। इस किले तक जाने के लिए कोई सड़क नहीं है। कहते हैं इस किले का निर्माण सिकरवार राज परिवार ने पहाड़गढ़ किले के बनने से पहले करवाया था। इस किले में आज एक भी संरचना मौजूद नहीं है। जंगल में वीरान पड़े इस किले के खंडहर तो मिलते हैं। यहाँ जगह-जगह टूटी हुई मूर्तियाँ, मंदिर के अवशेष देखने को मिलते हैं। यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि इस किले में राजा विक्रमादित्य का सिंहासन था। यहाँ पहाड़ की एक खोह में शिव प्राचीन मूर्ति है, जिस पर पानी की एक धारा से लगातार जलाभिषेक होता रहता है।

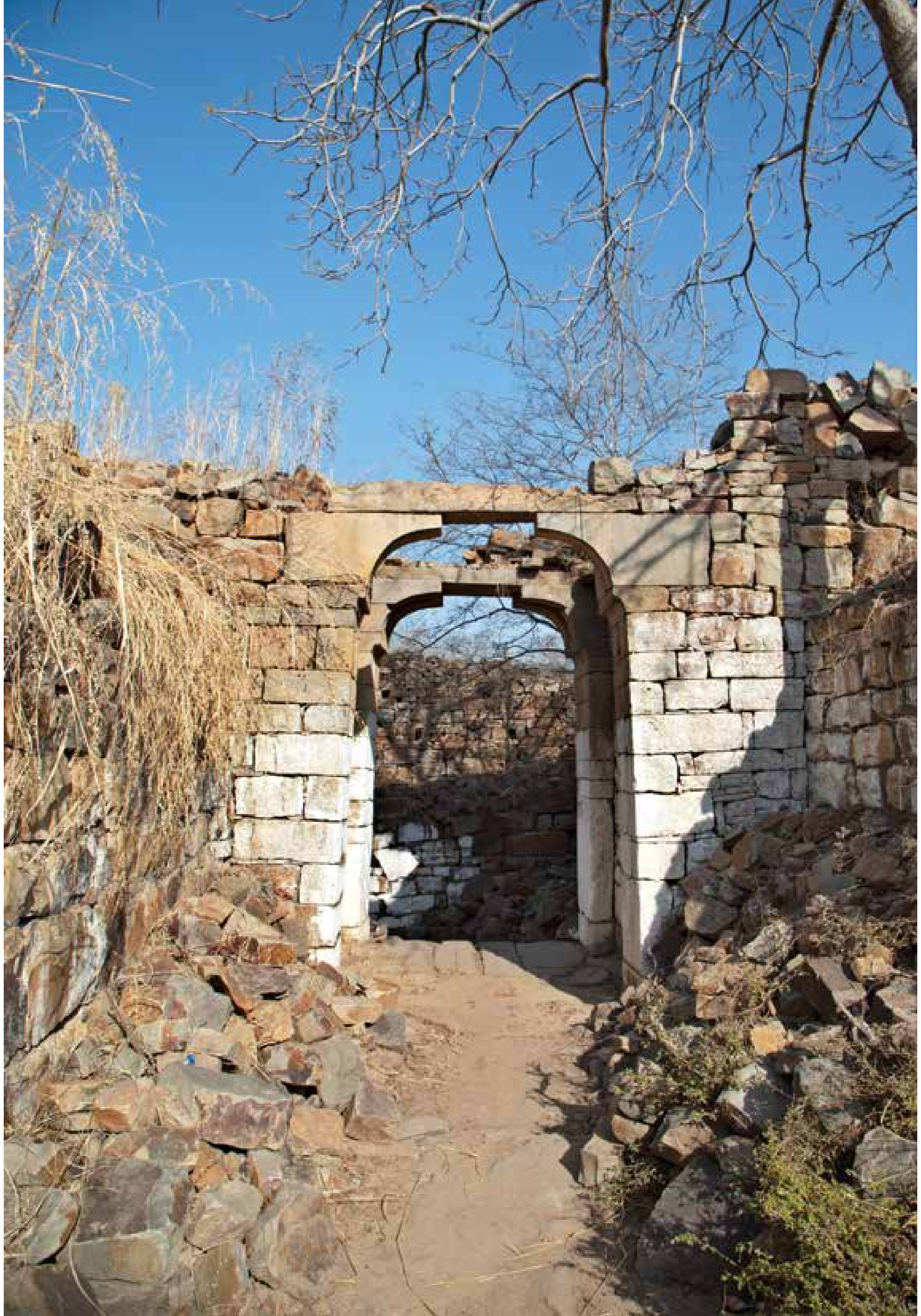

जैन मंदिर ज्ञानोदय

मुरैना जिला जैन तीर्थों की सम्पदा का भंडार है। मुरैना में ही जन्मे परमपूज्य सराकोद्धारक षष्ट पट्टाचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आशीर्वाद से धौलपुर-आगरा हाईवे पर एक विशाल एवं भव्य जैन तीर्थ का निर्माण कराया गया है। लगभग 15 वर्ष पूर्व इस जैन तीर्थ की कल्पना पूज्य गुरुदेव श्री ज्ञानसागर जी महाराज ने की थी। उनकी कल्पना को साकार करने के लिए उनके भक्तों ने जमीन खरीदी। इस जैन मंदिर का निर्माण कार्य लगभग 12 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुआ था, जो अब पूर्ण हो चुका है। लगभग 14 बीघा के विशाल प्रांगण में 55 फुट के कैलाश पर्वत की संरचना की गई है। इस पर्वत के ऊपर 7 फुट की वेदिका पर 3 फुट ऊंचे कमल सिंहासन पर साढ़े तेरह फुट ऊंची जैन धर्म के प्रवर्तक, प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 भगवान आदिनाथ की पद्मासन में प्रतिमा स्थापित की गई है। प्रतिमा के पीछे सुंदर आकर्षक कल्पवृक्ष बनाया गया है। पर्वत के नीचे प्रथम तल पर जिनालय में भगवान आदिनाथ, भगवान मुनि सुव्रतनाथ, भगवान चन्द्रप्रभु, भगवान शांतिनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमाएं विराजमान हैं। ज्ञानतीर्थ में आगन्तुक महानुभावों के आवास के लिए एक विशाल एवं तीन भव्य मंजिला अतिथि गृह का निर्माण किया गया है। क्षेत्र पर प्रतिदिन दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं के लिए 5000 वर्ग फुट में एक विशाल एवं भव्य भोजनशाला बनाई गई है, जिसमें 200 व्यक्ति एक साथ बैठकर भोजन कर सकते हैं।

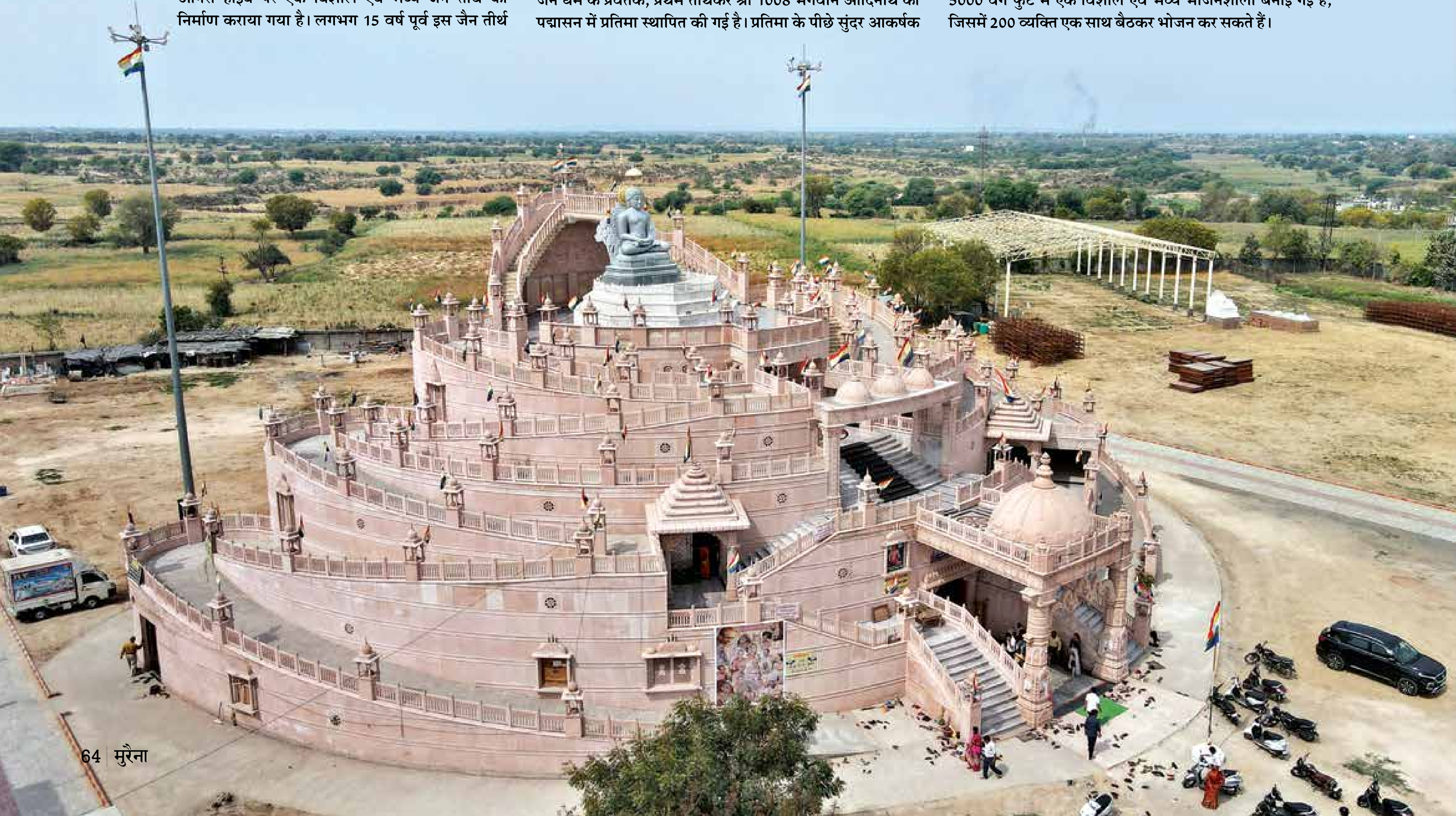

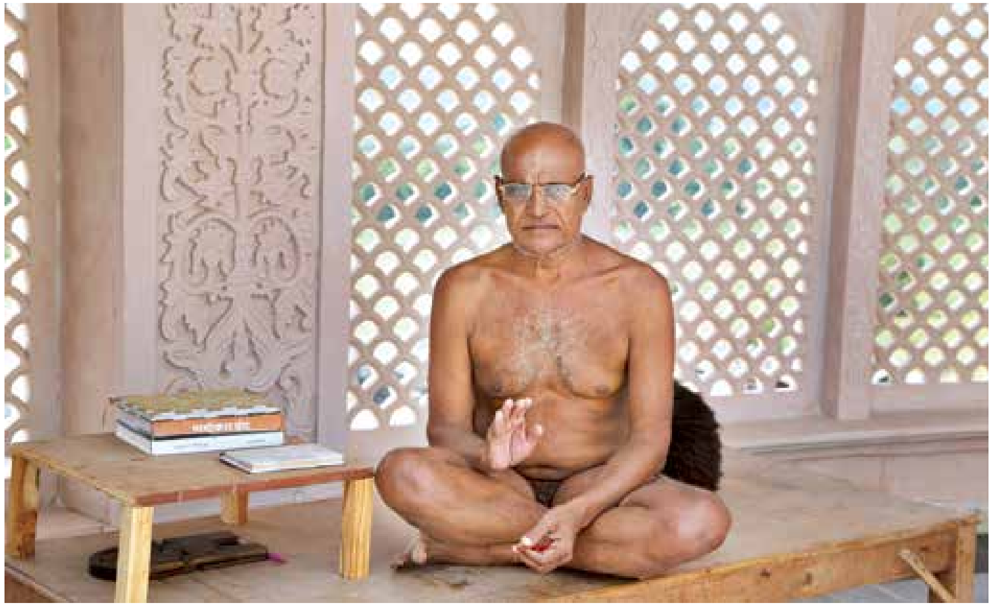

टिकटोली जैन अतिशय क्षेत्र

मुरैना जिला मुख्यालय से लगभग 45 किमी॰ और जौरा तहसील से 20 किमी॰ की दूरी पर स्थित है टिकटोली दूमदार जैन अतिशय क्षेत्र। यहाँ जैन तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान की करीब 20 फीट की प्रतिमा है। इस प्रतिमा को पहाड़ी में ही पत्थर काट कर बनाया गया है। यह ग्राम विन्ध्या पठार श्रृंखला मध्य स्थित होने के कारण एक रमणीक स्थल है। यहाँ मानसून के समय मंदिर के बाईं ओर एक सुन्दर झरना बहता है जो कि जंगल में इस स्थान को एक धार्मिक स्थल के साथ एक पिकनिक स्पॉट के रूप में भी पहचान दिलाता है।

हालाँकि मूलरूप से यह एक धर्म स्थल है, जो जंगलों के बीचोबीच स्थित है। यहां 11वीं सदी के जैन तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ, अरहनाथ और कुंथनाथ की पहाड़ों की चट्टानों में उकेरी गई आदमकद की प्रतिमाएं ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व रखती हैं।

कभी चट्टानों पर बंजर जमीन की वजह से वीरान से दिखने वाले इस धर्म स्थल पर दो हजार से ज्यादा पौधे रोप कर इसे रमणीक बनाया गया है। अब यहां का नजारा मन को प्रफुल्लित कर देने वाला है। इस तीर्थ स्थल के चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। तीर्थ स्थल पर बड़ी धर्मशाला और भोजनशाला है।

श्री 1008 शांतिनाथ अतिशय, सिहोनिया

मुरैना जिला मुख्यालय से 36 किमी० की दूरी पर स्थित है ग्राम सिहोनिया, इस छोटे से ग्राम में जैन समाज का एक विशाल मंदिर है। इस मंदिर में 11वीं शताब्दी की बनी भगवान शांतिनाथजी (16 फीट), भगवान अरहनाथ जी (10 फीट), भगवान कुंथुनाथ जी (10 फीट) की खड्गासन पत्थर की मूर्तियां भी स्थापित हैं। यहाँ घना जंगल था और गडरिये

अपनी बकरियाँ चराने आते थे। वह अपनी कुल्हाड़ी तेज़ करने के लिए मिट्टी में दबे पत्थरों पर धार लगाते। तब किसी को पता नहीं था कि वहां कुछ पत्थर इतने मज़बूत थे कि एक बार में धार लग जाती थी। वास्तव में वो कोई साधारण पत्थर नहीं थे बल्कि वह भगवान की मूर्ति का शीर्ष था। उस समय पास के एक गांव बरवाई में ब्रह्मचारी गुमानी लाल जैन रहते थे। उन्हें एक बार स्वप्न में भगवान ने दर्शन दिए और सिहोनिया गांव में एक स्थान पर प्राचीन जैन प्रतिमाएं गड़ी होने की बात कही। सुबह होने पर स्वप्न की जानकारी लोगों को दी और उन्हीं लोगों को साथ लेकर वह सिहोनिया पहुंचे और स्वप्न में बताए गए स्थान की खुदाई की जिसके बाद वह ऐतिहासिक महत्व की मूर्तियां प्राप्त हुईं। क्षेत्रवासियों ने फैसला कर उस स्थान पर मंदिर निर्माण का कार्य प्रारंभ कराया जो आज भव्यतम रूप ले चुका है। इस विशाल मंदिर का निर्माण कार्य 83 वर्ष पूर्व बरवाई गांव के ब्रह्मचारी गुमानी लाल जैन ने शुरू करवाया। इस मंदिर में मुनि सुपार्श्व नाथ भगवान की नौवीं शताब्दी की प्रतिमा है। भगवान केशलौंच के समय की अनोखी प्रतिमा है। ऐसी प्रतिमा पूरे देश में कहीं देखने को नहीं मिलेगी। इस मंदिर में प्राचीन जैन मूर्तियों का मूल्यवान भंडार मौजूद है।

ईश्वरा महादेव मंदिर

मुरैना जिले के पहाड़गढ़ संभाग में दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र में बढ़ई कोट के मार्ग में स्थित है आमझिरी। अरावली पठार का ये हिस्सा थोड़ी ऊंचाई पर है और पथरीला होने के कारण बंजर है। यहाँ केवल बबूल, जंगल जलेबी, बेर जैसी कंटीली झाड़ियाँ ही पाई जाती हैं। ऐसे में दूर-दूर तक कहीं कोई बड़ा वृक्ष नज़र नहीं आता। पठार के अंतिम सिरे पर थोड़ा नीचे उतरने पर आम का एक प्राचीन पेड़ स्थित है। ये प्रकृति का अद्भुत नजारा ही है कि

जहाँ दूर-दूर तक पानी का कोई स्रोत न हो, वहां पहाड़ की झिरी में से एक निर्मल जलधारा अविरल बहा करती है। ये जलधारा ही इस आम के वृक्ष को जीवित रखे हुए है।

इस पथरीले जंगल में पानी की एक बड़ी जलधारा किसी वरदान से कम नहीं है। यहाँ एक छोटा-सा आश्रम भी बना हुआ है जो हमेशा खुला रहता है। इस आश्रम में एक छोटा हनुमान मंदिर है। आमझिरी की जड़ में दो शिवलिंग स्थापित हैं और साथ ही स्वच्छ पानी का एक कुंड भी मौजूद है। आमझिरी के आसपास अनोखी हरियाली देखने को मिलती है, जो कि राहत देने वाली है। आश्रम के बाबा जी हर आगंतुक का खुले दिल से स्वागत करते हैं।

करह धाम

करह धाम चम्बल क्षेत्र का सुप्रसिद्ध तीर्थ है। मुरैना जिला मुख्यालय से 20 किमी॰ दूर मुरैना ग्वालियर हाईवे से लगा हुआ धनेला ग्राम में स्थित है करह धाम, जिसे लोग पाटिया वाले बाबा के नाम से भी जानते हैं। यहाँ एक सिद्ध बाबा हुए थे जिनका नाम संत रतनदास था। संत रतनदास इसी आश्रम में स्थित राम जानकी मंदिर के पास पड़े एक विशाल पत्थर (शिला/पटियां) पर बैठकर ही सत्संग व तप किया करते थे, इसलिए श्रद्धालुओं ने उन्हें पटिया वाले बाबा के नाम से पुकारना शुरू कर दिया। वहीं महाराजश्री यहां आने वाले श्रद्धालुओं को बड़े कढ़ाहे में दूध का प्रसाद बांटते थे। धीरे-धीरे इस आश्रम का नाम इसी कढ़ाहे के अपभ्रंश शब्द 'करह' के नाम से प्रसिद्ध हो गया। माघ माह में संत रतनदास की बरसी पर हर साल यहाँ सिय-पिय मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है।

क्षेत्रवासी किसी भी काम की शुरुआत पटिया वाले बाबा के जयकारे से ही करते हैं। पटिया वाले बाबा रामरतन दास महाराज की चरण पादुकाओं का नियमित पूजन यहां होता है और श्रद्धालु जीवन की सफलता के लिए पादुका का चरणामृत लेते हैं और मनोकामना की पूर्ति के लिए

धाम परिसर की परिक्रमा करते हैं। बाबा रामदास द्वारा प्रारंभ कराया गया राम कीर्तन एवं राम कथा का अविरल क्रम 50 वर्षों से करह धाम पर चल रहा है। इस मंदिर परिसर में हनुमानजी की एक ग्यारह मुखी प्रतिमा है। यहाँ एक अविरल जलधारा है जिसे सरयू कुंड कहा जाता है। कहते हैं पटिया वाले बाबा रामदास के समय एक बार करह आश्रम पर भंडारा चल रहा था, घी कम पड़ गया तो महाराज ने सरयू कुंड से जल लेकर कढ़ाई में डाल दिया था, उस जल में मालपुआ बने। बाद में जल के बराबर घी सरयू में डाला गया।

हनुमान मंदिर, घिरौना

हिन्दुओं की आस्था का प्रतीक बाबा श्री घरोना वाले हनुमान जी का यह मंदिर मुरैना से उत्तर की ओर आगरा रोड पर 4 किलोमीटर की दूरी पर कुंआरी नदी के किनारे पर स्थित है। यहां रोजाना धार्मिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं और चौबीस घंटे अखंड रामायण का संगीतमय पाठ होता है। मंदिर में गौशाला भी है जिसमें अनेकों गायों एवं गौवंशों का पालन किया जाता है। मंदिर की महिमा अपरंपार है, यह एक सिद्ध स्थल है, जहां आस्था एवं विश्वास के साथ हनुमान जी महाराज के दर्शन मात्र से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। मंदिर के भीतर हनुमान जी की प्राचीन प्रतिमा स्थापित है, साथ ही शिवालय, राम सीता दरबार, लक्ष्मी नारायण मंदिर और राधा-कृष्ण मंदिर मौजूद हैं। मंदिर में दसियों साल से लूला बाबा रहते हैं। क्षेत्रवासियों में इस मंदिर के प्रति विशेष आस्था है।

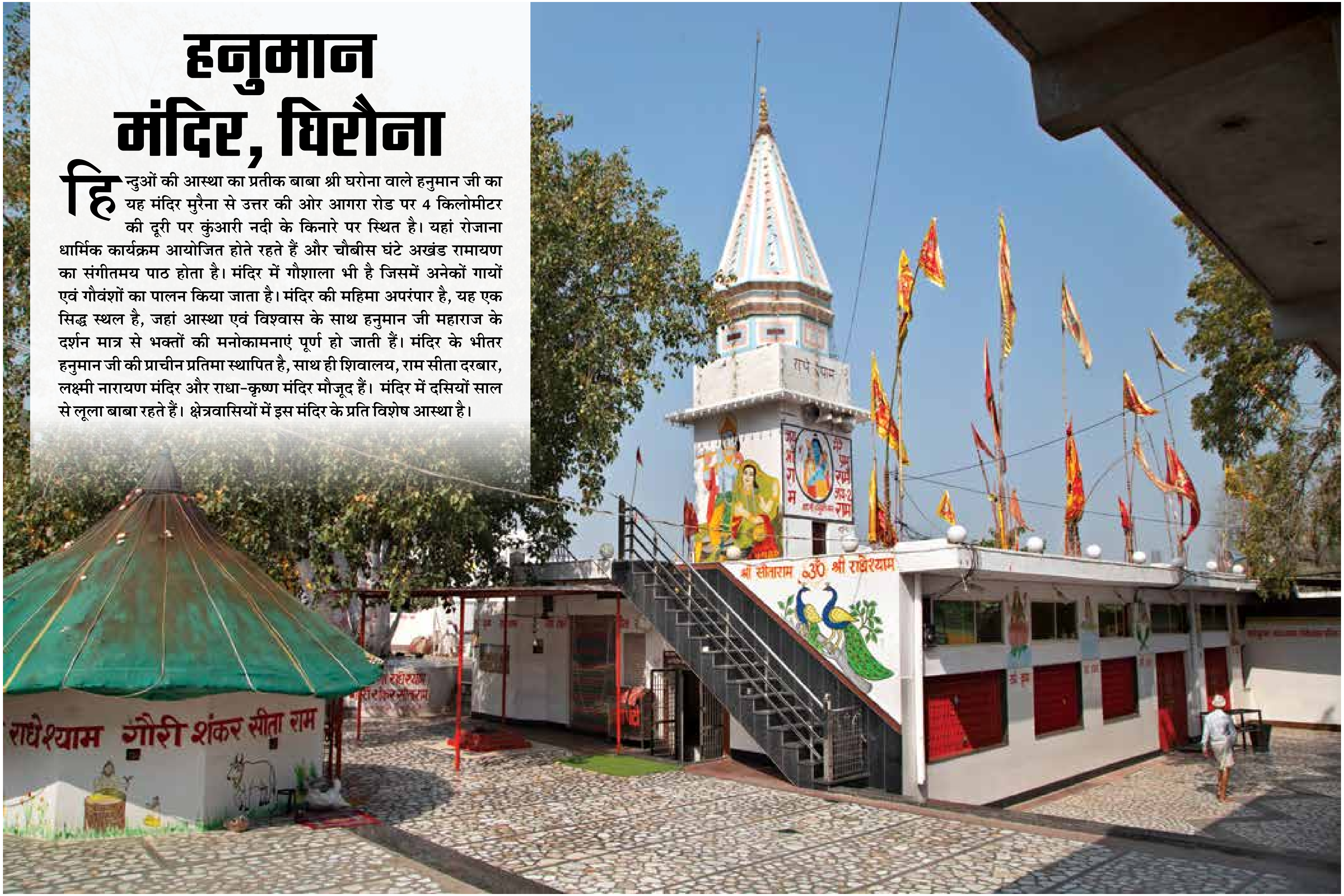

सीता राम

आलोपी शंकर मंदिर

मुरैना के कैलारस संभाग में बस स्टैंड से लगी 700 फीट ऊँची पहाड़ी पर स्थित है आलोपी शंकर मंदिर। इस मंदिर का निर्माण किसने करवाया इसकी एक रहस्यमयी कहानी है। कहते हैं एक हजार वर्ष पूर्व सिद्ध बाबा बौद्ध गिरी के अदृश्य होने के बाद उनके स्थान से एक जलहरी में दो शिवलिंग प्रकट हुए थे। कहानी बड़ी दिलचस्प है। यहाँ लाखा बंजारा रहा करता था। एक बार वह अपनी पीठ पर बोरी लेकर बाजार जा रहा था बाबा बौद्ध गिरी ने उससे बोरी के विषय में पूछा। उसने बाबा से झूठ कहा कि बोरी में नमक है। जब वह बाजार पहुंचा तो देखा कि बोरी की

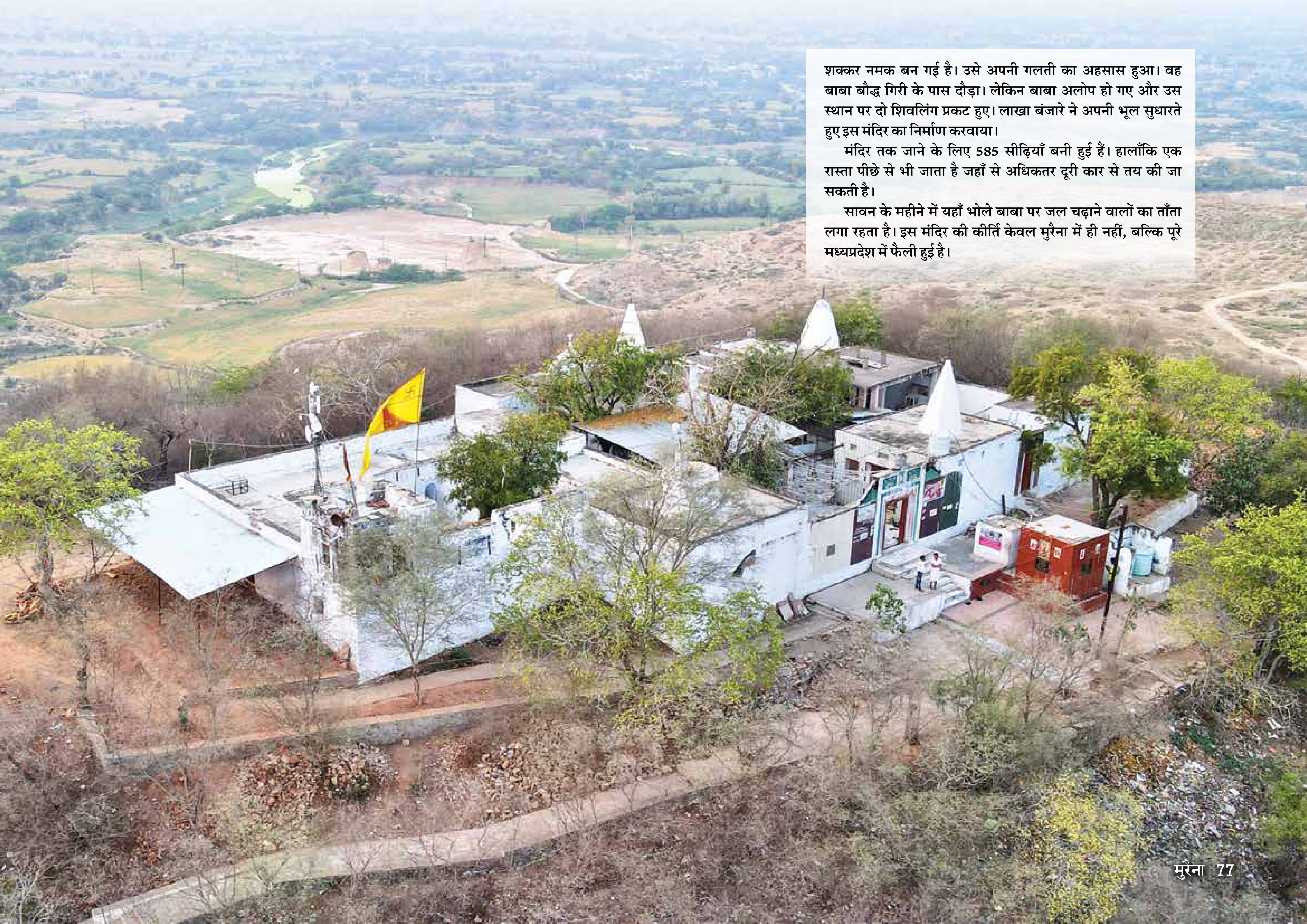

शक्कर नमक बन गई है। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह बाबा बौद्ध गिरी के पास दौड़ा। लेकिन बाबा अलोप हो गए और उस स्थान पर दो शिवलिंग प्रकट हुए। लाखा बंजारे ने अपनी भूल सुधारते हुए इस मंदिर का निर्माण करवाया।

मंदिर तक जाने के लिए 585 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। हालाँकि एक रास्ता पीछे से भी जाता है जहाँ से अधिकतर दूरी कार से तय की जा सकती है।

सावन के महीने में यहाँ भोले बाबा पर जल चढ़ाने वालों का ताँता लगा रहता है। इस मंदिर की कीर्ति केवल मुरैना में ही नहीं, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश में फैली हुई है।

माता बसैय्या मंदिर

मुरैना जिला मुख्यालय से 21 किमी दूर बसैय्या ग्राम में पड़ता है माता बसैय्या मंदिर। इस मंदिर की स्थापना लगभग 250 वर्ष पूर्व सिद्ध बाबा राजपुरी ने की थी। वह मय्या को कलकत्ता के कालीघाट मंदिर से लाए थे। पहले मय्या का स्थान घने जंगल के बीच था। मय्या को वह स्थान पसंद नहीं था। कहते हैं मय्या राजपुरी बाबा से सीधे संवाद करती थीं। मय्या ने राजपुरी बाबा को आदेश दिया और उन्हें यहाँ लाकर स्थापित किया गया। बाबा ने मय्या का स्थान बनवाया। राजपुरी बाबा के बाद कुंदन बाबा ने गद्दी संभाली और इस हवेली का निर्माण करवाया। इसलिए यह एक निजी मंदिर है जिसके मालिकाना अधिकार के लिए न्यायालय में एक लम्बे समय तक मुकदमा चला और अंत में न्यायालय ने इस मंदिर का मालिकाना हक केवल मय्या का ही माना। इस मंदिर से 22 गांव लगे हुए हैं और बड़ी जागीर है। इस मंदिर की देखभाल की ज़िम्मेदारी नाती चेला परंपरा के अनुसार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तानांतरित होती है। यहाँ नवरात्रि में भारी भीड़ जुटती है। यह एक सिद्ध मंदिर है।

बहरारा माता मंदिर

मुरैना की धरती चमत्कारों से भरी हुई है। यहाँ के कण-कण में देवताओं का वास है। ऐसी ही एक चमत्कारी देवी हैं बहरारा वाली माता। यह पांडवों की कुलदेवी का मंदिर है।

मुरैना से लगभग 60 किलोमीटर व कैलारस से लगभग 15 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़गढ़ के पास बहरारा माता मंदिर स्थित है। कहते हैं इस मंदिर का इतिहास द्वापर युग से जुड़ा है। यहाँ के लोगों की आस्था के अनुसार जब पांडव अज्ञातवास में थे तब उन्होंने पहाड़गढ़ के जंगलों में प्रवास किया। इस मंदिर से थोड़ा हट के दो-तीन किलोमीटर आगे भीतर जंगल में इन पांडवों के कुण्ड व रहने वाले स्थान भी मिलते हैं। जब अर्जुन को पूजा करने के लिए देवी की प्रतिमा की ज़रूरत पड़ी तो उन्होंने अपनी कुलदेवी का आह्वान किया। अर्जुन की तपस्या से प्रसन्न होकर माता वहीं एक शिला में समाहित हो गई। तभी से यहाँ बहरारा ग्राम में माता को शिला रूप में पूजा जाता है। नवरात्रि में यहाँ नौ दिन तक अखंड ज्योति व भंडारे का भी आयोजन किया जाता है।

नवरात्रि के नौ दिनों में यहाँ हजारों की संख्या में माता के मंदिर पर लोग दर्शन के लिए आते हैं। बहरारा माता मंदिर से लोगों की अटूट आस्था जुड़ी हुई है। मंदिर में माता के चरणों में जलकुंड है, जो कभी भी सूखता नहीं है। माता के भक्तों का विश्वास है कि इस जल को ग्रहण करने वाले की मनोकामना पूर्ण होती है। वहीं सारे रोग-दोष-क्लेश नष्ट हो जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि आंखों के इलाज के लिए भी यहाँ भक्त आते हैं। यहाँ के स्थानीय लोग सांप के काटने पर सर्पबंध लगवाते हैं और उसे कटवाने के लिए हीरामन मंदिर जाते हैं। उस बंध को काटने के लिए माता के चरणों में स्थित जलकुंड से जल लेकर अनुष्ठान पूरा किया जाता है।

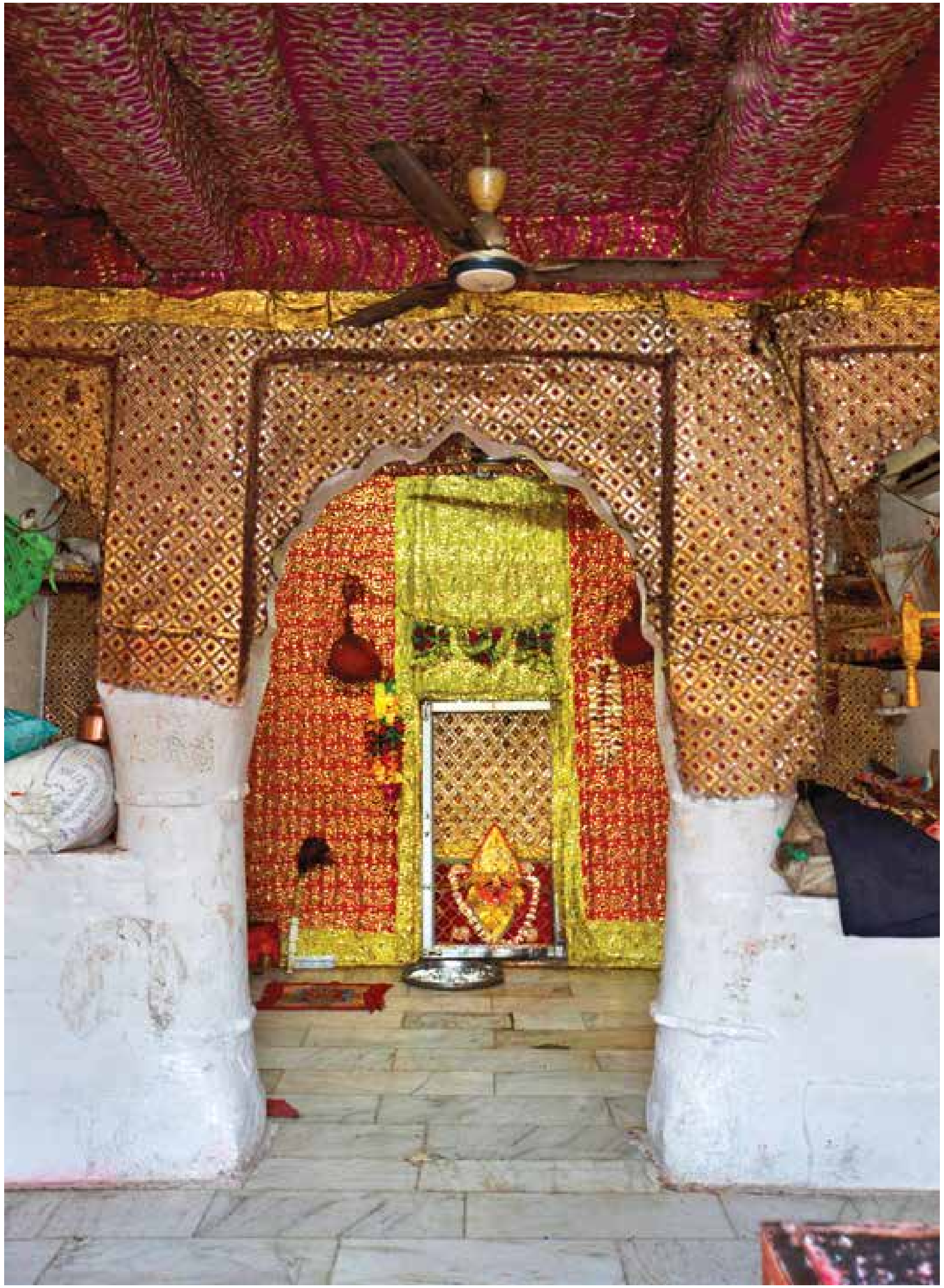

निरारा माता मंदिर

मुरैना के पहाड़गढ़ तहसील के जौरा संभाग के जंगलों में एक मंदिर है जिसे लोग निरारे वाली माता के नाम से जानते हैं। इस मंदिर पर लोग आंखों की बीमारी, शरीर पर पड़ने वाला चट्टा, संतान प्राप्ति जैसी समस्याओं के लिए पूजा करने आते हैं। लोगों का विश्वास है कि यहाँ मन्नत मांगने से सारी समस्याएं दूर हो जाती हैं।

अंचल में श्रद्धा व विश्वास की प्रतीक निरारा माता मंदिर में हर साल वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की पंचमी से दसवीं तक पांच दिन का विशाल मेला लगता है। पांच दिन तक इस मेले में रोजाना हजारों लोग निरारा माता के दर्शन को पहुंचते हैं।

संदेश

निधि जैन
ज़िला आबकारी अधिकारी, मुरैना

M	-	Memory
O	-	of
R	-	Rich
E	-	Experiences of
N	-	Nature
A	-	Architecture

भारत के हृदय प्रदेश में स्थित मुरैना अपने साँस्कृतिक, पुरातात्विक, प्राकृतिक, आध्यात्मिक व धार्मिक स्थलों का अद्भुत संगम है। यहाँ के वैभवपूर्ण मनोरम स्थल पर्यटन को नए आयाम देते हैं... चाहे वह मुरैना की पहचान हमारा शनि मंदिर या नागरशैली से बना ककनमठ मंदिर! प्रसिद्ध मितावली, पढ़ावली और बटेश्वर स्वर्ण त्रिभुज के नाम से प्रसिद्ध संगम है जो भगवान शिव और विष्णु के लिए समर्पित मंदिर है! साथ ही यहाँ चंबल घड़ियाल सैंक्चुरी प्राकृतिक सुंदरता की अभिव्यक्ति है!

आओ देखें इस प्राचीन संस्कृति, प्राचीन विरासत और प्राकृतिक संगम के इस पर्यटन स्थल को! **हमारा मुरैना**

संदेश

कृष्णा समदरिया
ज़िला समन्वयक (एमजीएनएफ), मुरैना

भारत के हृदय के शिरोधार और चम्बल के अंचल में पल्लवित यह शहर, स्वयं साहसिक विरासत, आध्यात्म और ऐतिहासिक धरोहरों के साक्षी रूप के प्रतिदर्श है। भारतीय ऐतिहासिक संस्कृति, कला, संगीत के संश्लेषण और यहां तक कि वर्तमान राजनीतिक संसद भवन की वास्तुकारिता का भी मार्गदर्शक रहा है। यदि जीवन वैचारिक शून्यता, प्रकृति से अलगाव या हतोत्साहन का अनुभव कर रहा है तो पर्यटक रूपी जिज्ञासुओं से मेरा निवेदन है कि चम्बल की लहरों से सृजित ऊर्जा, निरंतर प्रगति करते मुरैना और मध्यप्रदेश के इस मुकुट से सरोकार एक नई ऊर्जा की ओर आपको अग्रसर करेगा।

धन्यवाद

मध्यप्रदेश का मुकुट

मुरैना

डॉ.कायनात क़ाज़ी

DATCC
MORENA

जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद, मुरैना, मध्यप्रदेश

डॉ.कायनात क़ाज़ी

मध्यप्रदेश का मुकुट
मुरैना

डॉ. कायनात क़ाज़ी का परिचय

डॉ. कायनात क़ाज़ी फोटोग्राफर, ट्रैवल राइटर, डॉक्यूमेंट्री मेकर, सोलो फीमेल ट्रैवलर, शोधकर्ता और लेखिका हैं। लेकिन मूलतः वह एक जुनूनी यायावर हैं। इसकी बानकी यह है कि वह देश की एकमात्र सोलो फीमेल ट्रैवलर हैं, जिन्होंने महज चार साल में देश-विदेश में भ्रमण कर करीब दो लाख किलोमीटर की दूरी तय की है। फोटोग्राफर के रूप में उनके पास एक लाख से अधिक फोटो का कलेक्शन है। इनकी कई फोटो प्रदर्शनियां लग चुकी हैं।

डॉ. कायनात क़ाज़ी की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें शोध कृति 'कृष्णा सोबती का साहित्य और समाज' कहानी संग्रह 'बोगनवेलिया' और यात्रा वृत्तांत राहगिरी शामिल हैं।

यायावरी और लेखन के लिए डॉ. कायनात क़ाज़ी को ढेरों पुरस्कार मिल चुके हैं। 'पर्यटन रत्न' जैसे सम्मान से उन्हें नवाजा जा चुका है। ब्लॉगिंग के लिए उन्हें प्रसिद्ध न्यूज चैनल 'एबीपी न्यूज' के 'बेस्ट हिंदी ब्लॉगर' का अवार्ड भी मिल चुका है। हिंदी साहित्य में पीएचडी कायनात, राहगिरी नाम से हिंदी का पहला ट्रैवल फोटोग्राफी ब्लॉग भी चलाती हैं। उन्हें विश्वविद्यालयों में अध्यापन और व्याख्यान के लिए भी आमंत्रित किया जाता है। डॉ. कायनात क़ाज़ी ने एमबीए के साथ-साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर की भी पढ़ाई की है।

डॉ. कायनात क़ाज़ी वर्तमान में देहरादून, उत्तराखंड स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पैट्रोलियम एनर्जी स्टडीज के सेंटर फॉर कल्चर एंड आर्ट्स में उत्तराखंड की लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए कार्यरत हैं।